रजिस्ट्री सं. डी एल—33001/97 REGISTERED NO. DL—33001/97

# भारत का राजपत्र
# The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 13 ] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 29, 1997 (चैत्र 8, 1919)
No. 13] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 29, 1997 (CHAITRA 8, 1919)

**(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके**
**(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)**

## विषय-सूची


| | पृष्ठ |
|---|---|
| भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं | 317 |
| भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं | 309 |
| भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं | 3 |
| भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं | 481 |
| भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम | * |
| भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ | * |
| भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए साधारण सांविधिक नियम (जिसमें सारांश स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपलब्धियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) | * |
| भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश | * |
| भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | 247 |
| भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस | 643 |
| भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | — |
| भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं। | 943 |
| भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस | 49 |
| भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला अनुपूरक | * |


*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

# CONTENTS


PAGE

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . . 317

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . . 309

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . . 3

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence . . . . . 481

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi language of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PAGE

PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . 247

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs . . . . . 643

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . —

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies . . . . . 943

PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies . 49

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi *


*Files not received

# भाग I—खण्ड 1

# [PART I—SECTION 1]

## (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

## [Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 मार्च 1997

सं. 24-प्रेज/97 राष्ट्रपति/97—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्ति को ''सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक'' पुरस्कार प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :

1. कु. शैली खन्ना,
मार्फत श्रीमती शोभा खन्ना,
एल.आई.जी. फ्लैट सं. 61-ख,
रक्कार कालोनी, ऊना-174303
हिमाचल प्रदेश ।

दिनांक 7-6-95 को श्री गोपाल खन्ना के घर में आग लग गयी थी । परिवार के सदस्य अपनी जान बचाने के लिए बाहर दौड़ आए थे । यह पता लगने पर कि उनका डेढ़ वर्ष का पुत्र मास्टर रिशव अन्दर रह गया है, वे सहायता के लिए चिल्लाये । इस स्थिति में उस परिवार से मिलने आयी और अन्य लोगों के साथ घर से बाहर आ चुकी कु. शैली खन्ना घर में घुसी लेकिन कमरे में धुंआ होने के कारण बालक को ढूंढने में असफल होकर बाहर चली आयी । जब श्रीमती खन्ना ने देखा कि कु. शैली मास्टर रिशव के बिना ही बाहर आ गई है तो वे सहायता के लिए चिल्लाने लगी । कु. शैली मां के दुख को बर्दास्त न कर सकी और उसने दूसरा प्रयास किया और बेहोश बालक को ढूंढने में सफल रही और उसे सुरक्षित बाहर ले आयी । इस कार्य में वह थक गयी और बेहोश होकर नीचे गिर गयी । उस जगह लोग एकत्र हो गये और उसे चेतनावस्था में लाया गया ।

2. कु. शैली ने अपनी जान के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए बालक की जिन्दगी बचाने में अद्भुत साहस, तत्परता और दया दिखायी ।

गिरीश प्रधान
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 25-प्रेज/97 राष्ट्रपति/97—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को ''उत्तम जीवन रक्षा पदक'' पुरस्कार प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :

1. श्री अशोक ग्यानाबापुरी,
मार्फत श्री बाबूराव ग्यानोबा गिरि,
कोले नगर, कोयाना सब-स्टेशन के सामने,
लातूर, तालुका एवं जिला-लातूर,
महाराष्ट्र ।

दिनांक 24-5-94 की रात्रि को सेक्शनल इंजीनियर श्री अशोक ग्यानाबापुरी तीन अन्य लोगों के साथ जयाकवाड़ी परि-योजना की नहर के पानी को नियंत्रित करने के लिए जीप में यात्रा कर रहे थे । वह सड़क बहुत संकरी थी और उस पर केवल पैदल ही आया-जाया जाता था । उस पर वाहन नहीं चलते थे । सड़क की चौड़ाई कम होने के कारण, सड़क पर ढेले और गड्ढे थे, जिसके कारण जीप फिसलकर तेजी से नहर में गिर गयी । उसने दो बार पलटा खाया । जीप में बैठे लोगों के डूबने की आशंका थी । ऐसी नाजुक स्थिति में, श्री ए. जी. पुरी जीप से बाहर निकलने में सफल हो गए । उनके सिर (खोपड़ी) में चोट लगी थी और काफी खून बह रहा था । इसके बावजूद वह बचाव कार्य में लग गये और उन्होंने अकेले ही जीप में फंसे सभी तीनों लोगों को बचा लिया । चूंकि तीनों लोगों को तैरना नहीं आता था और भयवश उनकी मानसिक हालत ठीक नहीं थी, अतः श्री पुरी को उनको सुरक्षित बचाना कठिन लगा । नहर के पास काई जमी हुई थी । उन्होंने 1"×2.5" आकार के चार बड़े रूमाल लिये (जिन्हें महाराष्ट्र में ''बागायेस्कर'' कहा जाता है) और उनको आपस में बांध लिया । इन रूमालों से बनाई गई रस्सी की सहायता से सभी तीनों लोग श्री पुरी के दाहिने पैर को पकड़कर सुरक्षित बाहर आ गये ।

2. श्री अशोक ग्यानाबापुरी ने अपनी जान के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए सभी तीनों लोगों की जान बचाकर अद्-भुत सूझबूझ, साहस और तत्परता दिखायी ।

2. जी. एस. 121155×चार्ज (मरणोपरान्त)
मैकेनिक, बलजीत सिंह कांग,
गली नं. 2,
दशमेश नगर बरनाला रोड,
धूरी, डाकघर-धूरी,
जिला संगरूर, पंजाब,
पिन-148024

18 अप्रैल, 96 को, जी. एस. 12115 × चार्ज मैकेनिक बलजीत कांग को पसाखा मानितार रोड के पास लगे 0 किलोमीटर पर जल पम्प की मरम्मत के लिए तैनात किया गया था मरम्मत कार्य समाप्त करने के पश्चात् उसने मजदूरों की मदद से पम्प को एक वाहन में रखा ताकि वह इसे दूसरे निर्माण कार्य स्थल पर ले जा सके। वाहन में मजदूर भी बैठ गए। जब वाहन पसाखा में वैली पुल से गुजर रहा था तो चार्ज मैकेनिक बलजीत सिंह कांग ने देखा कि वाटर पम्प का एक्सहास्ट पाइप पुल से गुजरने वाली सैगिंग ओवर हैड हाई टेंशन इलेक्ट्रिक सप्लाई लाइन को छूने वाला है। वे वाहन की ओर दौड़े और उन्होंने गंभीर खतरे की अनदेखी करके इसको रोक दिया, जिससे वाहन में बैठे लोगों में खलबली नहीं मची। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना चार्ज मैकेनिक श्री बलजीत सिंह कांग द्वारा समय पर सूझबूझ दिखाने से न केवल 4 मजदूरों की जान बच गई और चालक को बिजली का झटका नहीं लगा, बल्कि मंहगे उपस्कर/वाहन को भी अपूर्णीय क्षति होने से बच गई। दुर्भाग्यवश इस कार्य में चार्ज मैकेनिक बलजीत सिंह कांग को ही बिजली का करंट लग गया।

2. जी. एस.-121155 × चार्ज मैकेनिक बलजीत सिंह कांग ने अपने को खतरनाक स्थिति में डालकर अपने साथियों की जान बचाने में अपने जीवन का बलिदान करके साहस, बहादुरी और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

गिरीश प्रधान
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

---

सं. 26-प्रेज/97 राष्ट्रपति/97—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री विक्रम गौतम,
सुपुत्र श्री प्रदीप सिंह गौतम,
कोठी नं. 1/सेक्टर 14,
सोनीपत-131001,
हरियाणा।

13-1-1995 को प्रातः लगभग 8.15 बजे पांच बदमाशों ने शम्भू दयाल माडर्न स्कूल, सोनीपत के 12वीं कक्षा के एक छात्र, श्री हरीश कुमार कौशिक पर हमला बोल दिया। उसका सहपाठी, श्री विक्रम गौतम उस रास्ते से गुजर रहा था। वह हरीश कुमार की मदद के लिए दौड़ा तथा उन बदमाशों से उसे बचाने में सफल हो गया। बदमाशों के साथ संघर्ष में, श्री गौतम की पीठ, बाजू तथा सिर पर चाकू के घाव लगे। अपने घावों की परवाह किए बिना वह बुरी तरह से घायल हरीश को सर्जरी सहित समयोचित चिकित्सा सहायता के लिए अस्पताल ले गया। यदि उसने समय पर हस्तक्षेप न किया होता तो हरीश कुमार की चाकू के घावों के कारण मृत्यु हो गई होती। बाद में अपराधियों की शिनाख्त कर ली गई और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा उनके विरुद्ध आपराधिक मामला दर्ज किया गया।

2. श्री विक्रम गौतम ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, अपने सहपाठी की जान बचाने में साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

2. श्री रवीन्द्र ढलता,
गांव मतासा, डाकखाना झरोग,
तहसील जुब्बल, जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश।

सरस्वती नगर में पब्बर नदी पर एक झूला पुल था जो 1995 में क्षति ग्रस्त हो गया था। अतः सरकार ने एक 75 मीटर लम्बे तथा 50 मीटर ऊंचे लटकने वाले पुल का निर्माण किया, ताकि लोग नदी की दूसरी ओर जा सकें।

2. 5-2-1996 को श्री महेन्द्र जिन्टा, पर्यवेक्षक, हिमाचल प्रदेश, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम, लटकने वाले पुल से पब्बर नदी पार करते समय अकस्मात नदी में गिर गए। यद्यपि उस समय जल की गहराई लगभग केवल 3 से 4 फीट थी, फिर भी जल का प्रवाह इतना तेज था कि वह श्री महेन्द्र जिन्टा को उनके गिरने के स्थान से 5 से 6 मीटर दूर तक बहा ले गया। सार्वजनिक वितरण सहायक, झागटन, श्री रवीन्द्र ढलता भी उस समय पुल पार कर रहे थे। श्री रवीन्द्र ढलता तुरन्त नदी में कूद पड़े तथा श्री महेन्द्र जिन्टा को सुरक्षित बचा लाए। इस प्रक्रिया में श्री रवीन्द्र ढलता को कुछ चोटें आयीं।

3. स्वयं को चोटें पहुंचाने के जोखिम पर श्री महेन्द्र जिन्टा की जान बचाने में श्री रवीन्द्र ढलता ने साहस व तत्परता का परिचय दिया।

3. कुमारी डी. आर. श्री गौरी,
सुपुत्री डा. डी. ए. रूद्रप्पा,
वरिष्ठ विशेषज्ञ,
द्वारा सं. 117 (32),
सी. जी. अस्पताल क्वार्टर्स,
दवेनगिरि-577 004

16-10-1995 को रात्रि के लगभग 9.25 बजे दवेनगिरि अस्पताल क्वार्टर में रहने वाला श्री सैमसन (24 वर्ष) अपने मकान की छत पर चढ़ गया तथा बेरोजगारी की समस्या के कारण

आत्महत्या करने के इरादे से भूमि से 30 मीटर ऊंची पास के पेड़ की डाल से लटककर स्वयं को फांसी लगा ली । उसकी मां की चिल्लाने की आवाजें सुनकर बहुत से लोग घटनास्थल पर इकट्ठे हो गए, परन्तु किसी ने भी उसकी जान बचाने की कोशिश नहीं की । इस विकट घड़ी में कोई श्री कुमार स्वामी तथा उसकी बहन कुमारी श्री गौरी एक टार्च लेकर दौड़ते हुए आए । श्री कुमार स्वामी श्री सैमसन के मकान के प्रथम तल के निकट पेड़ पर चढ़ गए तथा एक हंसिए की सहायता से रस्सी को काट दिया । भूमि पर खड़ी कुमारी श्री गौरी ने बड़े साहस के साथ अपनी पूरी ताकत लगाकर श्री सैमसन को जमीन पर गिरने से रोकने के लिए उसे पकड़ लिया । श्री कुमार स्वामी तेजी के साथ पेड़ से उतरे तथा श्री सैमसन की गले की रस्सी को काट दिया, जो कि बहुत कसी हुई थी । सैमसन के हृदय की गति बाधित हो गयी थी । इस आपात स्थिति को समझते हुए कुमारी श्री गौरी ने बाहर से हृदय मसलना शुरू कर दिया तथा श्री कुमार स्वामी ने मुख से मुख लगाकर कृत्रिम सांस देनी शुरू कर दी । लगभग 15 मिनट के सतत प्रयास के बाद श्री सैमसन के हृदय ने सांस लेने का काम पुनः शुरू कर दिया ।

2. निश्चित मौत के मुंह से एक व्यक्ति की जान बचाने में कुमार डी. आर. श्री गौरी ने एक अनुकरणीय पहल, तत्परता और साहस का परिचय दिया ।

4. श्री विश्राम सुब्रे नायक,
माधवाड़ा, कोरवाड़ी गांव,
करवर तालुक,
उत्तर कन्नड जिला,
कर्नाटक ।

20-5-1996 को 21 व्यक्ति कोरवाड़ी से उलगा जाने के लिए एक देशी नाव में बैठकर काली नदी पार कर रहे थे । जब नाव नदी तट से लगभग 10 से 15 फुट की दूरी पर थी तब यह अपने ही भार से उलट गयी तथा सभी यात्री नदी में गिर गए । वहां नदी की गहराई लगभग 25 फुट थी । इसे देखकर श्री विश्राम सुब्रे नायक, जो नदी तट पर ईंधन लकड़ी काट रहा था, घटना स्थल पर दौड़कर आया । वह नदी में कूद पड़ा और एक-एक करके सात व्यक्तियों को डूबने से बचा लिया । सात व्यक्तियों की डूबने से मृत्यु हो गई तथा शेष सात व्यक्ति अपने-आप तैरकर सुरक्षित बच गए ।

2. अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए काली नदी में डूबने से सात व्यक्तियों की जान बचाने में श्री विश्राम सुब्रे नायक ने साहस एवं तत्परता का परिचय किया ।

5. श्री रतनाज बाबू अगवाने,
सं. 547, 13वां क्रास, 5वीं,
मेन डालर्स कालोनी,
आर. एम. बी. एक्सटेन्शन,
बेल रोड,
बंगलौर ।

24-5-1994 को कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमंत्री, श्री एम. वीरप्पा मोइली एक उलट गई नाव के पीड़ितों को तत्काल राहत प्रदान करने के लिए तुंग-भद्रा नदी के तट पर बसे सिंह तालूर गांव का दौरा कर रहे थे । उपायुक्त एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री रतनाज बाबू अगवाने, पुलिस अधीक्षक, भूतपूर्व मंत्री, श्री शम्भूनाथ और विडियो फोटोग्राफर श्री कदली कोप्पा मुख्यमंत्री की नाव के पीछे-पीछे जा रहे थे । अचानक उनकी नाव 25 फुट गहरे पानी में उलट गयी, जिससे उनका जीवन खतरे में पड़ गया । पुलिस अधीक्षक तैर कर सुरक्षित बच गए श्री रतनाज बाबू अगवाने भी तैरना जानते थे । तथापि, श्री शम्भूनाथ और श्री कदली कोप्पा तैरना नहीं जानते थे । श्री अगवाने ने सर्वश्री शम्भूनाथ और कदली कोप्पा को जीवन के लिए संघर्ष करते देखा । वे उनकी जान बचाने के लिए तत्काल हरकत में आ गए । विडियो फोटोग्राफर अत्यन्त आतंकित था और उसने तैरने का कोई प्रयास नहीं किया । इसके बजाय उसने श्री अगवाने को पानी में खींचना शुरू कर दिया । अतः उसे बचाया नहीं जा सका और दुर्भाग्यवश वह डूब गया । तथापि, श्री अगवाने भूतपूर्व मन्त्री, श्री शम्भूनाथ को खींचकर किनारे की ओर लाकर उनकी जान बचाने में सफल हो गए । अन्ततः श्री शम्भूनाथ को एक अन्य छोटी नाव की सहायता से लोगों के द्वारा नदी से सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया । इस प्रक्रिया में श्री अगवाने सात मिनट से अधिक समय तक 25 फीट गहरी और लगभग 300 फीट चौड़ी नदी में रहे ।

2. श्री रतनाज बाबू अगवाने ने अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए श्री शम्भूनाथ की जान बचाने में साहस एवं तत्परता का परिचय दिया ।

6. श्री डी. आर. कुमार स्वामी,
सुपुत्र डा. डी. ए. रुद्रप्पा,
वरिष्ठ विशेषज्ञ,
क्वार्ट. सं. 117 (32),
सी. जी. अस्पताल क्वार्टर्स,
दवेनगिरि-577 004 ।

16-10-1995 को रात्रि के लगभग 9.25 बजे दवेनगिरि अस्पताल क्वार्टर्स में रहने वाला, श्री सैमसन (24 वर्ष) अपने मकान की छत पर चढ़ गया तथा बेरोजगारी की समस्या के कारण आत्महत्या करने के इरादे से भूमि से 30 मीटर ऊंची पास के पेड़ की डाल से लटककर स्वयं को फांसी लगा ली । उसकी मां की चिल्लाने की आवाजें सुनकर बहुत से लोग घटनास्थल पर इकट्ठे हो गए, परन्तु किसी ने भी उसकी जान बचाने की कोशिश नहीं की । इस विकट घड़ी में कोई श्री कुमार स्वामी तथा उसकी बहन कुमारी श्री गौरी एक टार्च लेकर दौड़ते हुए आए । श्री कुमार स्वामी श्री सैमसन के मकान के प्रथम तल के निकट पेड़ पर चढ़ गए तथा एक हंसिए की सहायता से रस्सी को काट दिया । भूमि पर खड़ी कुमारी श्री गौरी ने बड़े साहस के साथ अपनी पूरी ताकत लगाकर श्री सैमसन को जमीन पर गिरने से रोकने के लिए

उसे पकड़ लिया । श्री कुमार स्वामी तेजी के साथ पेड़ से उतरे तथा श्री सैमसन की गले की रस्सी को काट दिया, जो कि बहुत कसी हुई थी । सैमसन के हृदय की गति बाधित हो गयी थी । इस आपात स्थिति को समझते हुए कुमारी श्री गौरी ने बाहर से हृदय मसलना शुरू कर दिया तथा श्री कुमार स्वामी ने मुख से मुख लगाकर कृत्रिम सांस देनी शुरू कर दी । लगभग 15 मिनट के सतत प्रयास के बाद श्री सैमसन के हृदय ने सांस लेने का काम पुन: शुरू कर दिया ।

2. निश्चित मौत के मुंह से किसी व्यक्ति की जान बचाने में श्री डी. आर. कुमार स्वामी ने अनुकरणीय पहल एवं तत्परता का परिचय दिया ।

7. श्री अनीष,
कनियन कन्डियल,
कीझूर देसम, डाकखाना किलूर,
पय्योली, कोजीकोड जिला,
केरल ।

9-6-1955 को प्रात: लगभग 8.00 बजे दो बच्चों सहित पांच व्यक्ति एक विवाह समारोह में शामिल होने के लिए मनीयर गांव जाने के लिए एक देशी नाव में "कुट्टीयादि पुझा" नदी को पार कर रहे थे । जब उनकी नाव पय्योली गांव के निकट नदी के "मूझीकल कादव" स्थान पर नदी के किनारे से लगभग 20 मीटर की दूरी पर थी तभी यह उलट गयी तथा सभी पांच यात्री नदी में गिर गए । दुर्घटनास्थल पर नदी की गहराई लगभग 7 से 8 मीटर थी । इस घटना को देखकर नदी के तट पर खड़े श्री अनीष और श्री श्रीधरण नदी में कूद पड़े और तैरकर दुर्घटनास्थल तक पहुंचे तथा एक-एक करके सभी पांच व्यक्तियों को सुरक्षित बचा लिया ।

2. अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए "कुट्टीयादि पुझा" नदी में डूबने से पांच व्यक्तियों की जान बचाने में श्री अनीष ने साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

8. श्री एम. आर. बीजू,
मडाथिल हाउस,
कुडयाथूर डाकखाना,
कोलापरा-685 590,
जिला इडुक्की,
केरल ।

30-5-96 को प्रात: 9.00 बजे मास्टर अजिल (12 वर्ष) मलनकरा बांध के एम्पाझा काडवू में अपनी मां के साथ स्नान करते समय अचानक फिसल गया तथा पानी में गिर पड़ा । उस समय पानी की गहराई 6 मीटर थी । अपने पुत्र को डूबता देखकर मां मदद के लिए चिल्लाई । उसकी चीखें सुनकर लोग दुर्घटनास्थल की ओर दौड़े, परन्तु कोई भी व्यक्ति डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए बांध में कूदने का जोखिम उठाने का साहस न जुटा पाया । इस संकट की घड़ी में उसी गांव का श्री बीजू मदद के लिए आगे आया और पानी में कूद पड़ा तथा बच्चे को सुरक्षित बचा लाया ।

2. श्री एम. आर. बीजू ने अपनी स्वयं की जान को जोखिम की परवाह न करते हुए डूबने से एक बच्चे की जान बचाने में साहस व तत्परता का परिचय दिया ।

9. मास्टर प्रजेश,
सुपुत्र श्री नानू,
कनलोम्मल हाउस,
कयाकोड़ी (डाकखाना),
कयाकोड़ी, कोजीकोड़ जिला,
केरल ।

16-6-1994 को सायं 4 से 5 बजे के बीच कुमारी आयशा (6 वर्ष) अपने स्कूल से लौटते समय फिसल गई तथा एक नहर में गिर गई । 4 मीटर गहरी नहर तेज रफ्तार से बह रहे पानी से भरी हुई थी । जल की तेज धार उसे लगभग 70 मीटर दूर बहा ले गई । यह देखकर मास्टर प्रजेश (15 वर्ष) अपने स्वयं की जान की परवाह किए बिना नहर में कूद पड़ा तथा कुमारी आयशा को सुरक्षित बचा लाया ।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद मास्टर प्रजेश ने साहस व तत्परता का परिचय दिया तथा नहर में डूबने से एक लड़की की जान बचा ली ।

10. श्री राजन, (मरणोपरान्त)
सुपुत्र श्री सेबास्टियन,
पप्पाली वीडू,
अर्शाकापुरम, अलूवा,
एर्नाकुलम जिला, केरल ।

2-8-1995 को अंकामली से कलाड़ी जा रही एक यात्री बस एक दूसरे वाहन को साइड देते समय एक दलदली धान के खेत में उलट गई । बस यात्रियों से भरी हुई थी जिनमें अधिकतर स्कूल के बच्चे थे । श्री राजन द्वारपाल (डोर कीपर) जो दुर्घटना के समय आगे के दरवाजे पर खड़ा हुआ था, बस उलटने से पूर्व आसानी से बाहर कूदकर सुरक्षित बच सकता था परन्तु उसने अपने दोनों हाथ दरवाजे में अड़ा लिए और स्कूल के बच्चों को बस से दलदली खेत में गिरने से रोक लिया और इस प्रकार उनकी जान बचा ली । जब बस उलटी थी तब श्री राजन दलदली जमीन से टकरा गया था तथा दूसरे यात्री उसके ऊपर गिर गए थे । श्री राजन की एक्सफीजिया के कारण मृत्यु हो गई ।

2. श्री राजन ने युवा बच्चों की जान बचाने में असाधारण साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस कार्य में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

11. श्री श्रीधरन,
कलारीकान्डी हाउस,
कीझर देसम, डाकखाना किल्लूर,
पैय्योली, कोजीकोड जिला,
केरल ।

9-6-1995 को प्रातः लगभग 8.00 बजे दो बच्चों सहित पांच व्यक्ति एक विवाह समारोह में शामिल होने के लिए मनीयूर गांव आने के लिए एक देशी नाव में "कुट्टीयादि पुझा" नदी को पार कर रहे थे । जब उनकी नाव पयुयोली गांव के निकट नदी के "मूझीकल कावद" स्थान पर नदी के किनारे से लगभग 20 मीटर की दूरी पर थी तभी यह उलट गयी तथा सभी पांच यात्री नदी में गिर गए । दुर्घटनास्थल पर नदी की गहराई लगभग 7 से 8 मीटर थी । इस घटना को देखकर नदी के तट पर खड़े श्री अनीश और श्री श्रीधरण नदी में कूद पड़े और तैर कर दुर्घटनास्थल तक पहुंचे तथा एक-एक करके सभी पांच व्यक्तियों को सुरक्षित बचा लिया ।

2. श्री श्रीधरन ने अपनी जान की परवाह न करते हुए पांच व्यक्तियों की जान "कुट्टीयादि पुझा" नदी में डूबने से बचाकर साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

12. श्री एम. के. सुरेश लाल,
मुरिगलाथू हाउस,
गोल्डन स्ट्रीट,
वाडुथला डाकखाना,
कोच्ची-23, एर्नाकुलम जिला,
केरल ।

दिनांक 5-12-1995 को रात के लगभग 8.30 बजे जल परिवहन विभाग की यात्री नौका में लश्कर के रूप में कार्य कर रहे सर्व श्री एम. के. सुरेश लाल और वी. एम. उम्मेर ने देखा कि एक मारूति कार जिसमें तीन व्यक्ति सवार थे, पानी में गिर पड़ी । कार से बाहर निकलने में असमर्थ श्रीमती नैनसी जाय और उनके पांच वर्षीय पुत्र ने कार की खिड़की से सिर बाहर निकाला और सहायता के लिए चिल्लाए । उनकी चिल्लाने की आवाज सुनकर श्री एम. के. सुरेशलाल और श्री वी. एम. उम्मेर अपनी नाव उस अभागी कार के पास लाए और पानी में कूद गए तथा पानी के तेज बहाव के बावजूद सभी तीनों व्यक्तियों को एक-एक कर बाहर निकाल लाए ।

2. श्री एम. के. सुरेशलाल ने अपनी जान की परवाह न करते हुए कार में फंसे तीन व्यक्तियों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

13. श्री उदय कुमार मनपोइल,
मनपोइल हाउस,
चेलोरा ग्राम, डाकखाना कपड़,
कन्नूर ताल्लुका, कन्नूर जिला,
केरल-678006 ।

दिनांक 6-8-1995 को हाईस्कूल के तीन विद्यार्थी, सर्वश्री उलाम, विनोद और सुथ्थार स्नान करने के लिए पयुयगुथालम समुद्र तट पर गए थे । वे उफनते समुद्र को पार नहीं कर पाए और जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे । घटनास्थल पर उपस्थित मछुआरों सहित किसी भी व्यक्ति ने लड़कों को बचाने की कोशिश करने का साहस नहीं किया । यह देखकर समुद्र तट पर खड़े व्यक्तियों में से श्री उदय कुमार मनपोइल, अन्य व्यक्तियों द्वारा जान को खतरे की चेतावनी दिए जाने के बावजूद, तूफानी समुद्र में कूद पड़े । वे दो विद्यार्थियों (सर्व श्री सलाम और विनोद) की जान बचाने में सफल हो गए । दुर्भाग्यवश, इस बीच तीसरे विद्यार्थी (श्री सथ्थार) की डूब जाने से मृत्यु हो गई।

2. श्री उदय कुमार ने अपनी जान की परवाह न करते हुए दो लड़कों को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

14. श्री वी. एम. उम्मेर,
नौका लश्कर सं. सी.सी. 4069,
केरल राज्य जल परिवहन विभाग,
क्षेत्रीय कार्यालय,
एर्नाकुलम, केरल ।

दिनांक 5-12-1995 को रात के लगभग 8.30 बजे, जल परिवहन विभाग की यात्री नौका में लश्कर के रूप में कार्य कर रहे सर्व श्री वी. एम. उम्मेर और एम. के. सुरेश लाल ने देखा कि एक मारूति कार जिसमें तीन व्यक्ति सवार थे, पानी में गिर पड़ी । कार से बाहर निकलने में असमर्थ श्रीमती नैनसी जाय और उसके पांच वर्षीय पुत्र ने कार की खिड़की से सिर बाहर निकाला और सहायता के लिए चिल्लाए । उनकी चिल्लाने की आवाज सुनकर सर्व श्री वी. एम. उम्मेर और एम. के. सुरेश लाल अपनी नाव उस अभागी कार के पास लाए और पानी में कूद गए तथा पानी के तेज बहाव के बावजूद सभी तीनों व्यक्तियों को एक-एक कर बाहर निकाल लाए ।

2. श्री वी. एम. उम्मेर ने अपनी जान की परवाह न करते हुए कार में फंसे तीन व्यक्तियों की जान बचाने में सहास और तत्परता का परिचय दिया ।

15. श्री विजयन वी.,
चिराङलवीड,
थथामन्ना, नूरानाड डाकखाना,
म्लोवीक्करा,
अलप्पुझा जिला,
केरल-690504 ।

दिनांक 3-11-1995 को लगभग 2 बजे (अपराह्न) सी. बी. एम. हाई स्कूल, नूरानाड, अलप्पुझा जिला का कक्षा-5 का विद्यार्थी मास्टर संतोष कुमार पी. स्कूल के पास लगभग 27 फुट गहरे खुले कुएं में गिर पड़ा । पड़ोसी और विद्यार्थी घटना-स्थल पर एकत्रित हो गए परन्तु कोई भी लड़के को डूबने से बचाने के लिए आगे नहीं आया । ऐसे मौके पर उसी स्कूल का विद्यार्थी श्री विजयन वी. (18 वर्ष) कुएं में उतरा और मास्टर संतोष कुमार की जान बचाई ।

2. श्री विजयन थी. ने अपनी जान की गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए एक लड़के को डूबने से बचाकर अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

16. श्री रफीक,
पुत्र श्री ओ. पी. बावाकंजु,
धड्डल पराइडम,
सनाथनम वार्ड,
अलप्पुझा,
केरल ।

दिनांक 7-2-1996 को दोपहर लगभग 12 बजे, ए. आर. कैम्प, अलपुझा के पास आंगनवाड़ी में एक शैड में आग लग गई । घटना के समय शैड में 5 वर्ष से कम आयु के 13 बच्चे और एक अध्यापक थे । अचानक आग सारे शैड में फैल गई । अध्यापक और बच्चे सहायता के लिए चिल्लाए । उनकी चिल्लाने को आवाज सुनकर, ए. आर. कैम्प के पी. सी. 3806, श्री रफीक सहायता के लिए दौड़े और वह बचाव कार्य में लग गए और उन्हें सुरक्षित बाहर लाने में सफल हो गए । जलते हुए शैड में पीछे छूट गए दो बच्चों की चीख सुनकर वह पुनः शैड में गए और उन्हें तेजी से सुरक्षित बाहर निकाल लाए ।

2. श्री रफीक ने अपनी जान की खतरे की परवाह न करते हुए आग में फंसे 13 बच्चों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

17. कुमारी किरण गुज्जर,
मकान नं. 12/21/1,
सुल्तानिया इन्फैन्ट्री लाइन्स,
भोपाल,
मध्य प्रदेश ।

दिनांक 15-7-1992 को सायं 5-6 बजे के बीच, कुमारी किरण गुज्जर (4½ वर्ष) अपने भाई मास्टर गौरव (2½ वर्ष) के मिट्टी में सने पैरों के लिए उसे पानी की टैंक के पास ले गई। अचानक बच्चा फिसल कर टैंक में गिर गया । इस घटना के समय पानी के टैंक में 3½ फुट पानी था । वह बच्चा डूबने लगा और केवल उसके कपड़े दिखाई दे रहे थे । यह देखकर, कुमारी किरण गुज्जर ने उसके तैरते कपड़े मजबूती से पकड़ लिए और उसे सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इतनी कम आयु की होते हुए भी कुमारी किरण गुज्जर ने अपनी जान की गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए अपने भाई की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

18. श्री अब्दुल वहीद खां,
ड्राईवर,
मध्य प्रदेश राज्य,
परिवहन निगम,
सब-डिपो पढुरना,
जिला छिंदवाड़ा,
मध्य प्रदेश ।

जैम नदी के किनारे पर बसे पढुरना शहर में, प्रत्येक वर्ष पोला त्यौहार के बाद "गोटमार मेला" आयोजित किया जाता है। नदी के प्रत्येक ओर से व्यक्ति नदी के दूसरी ओर के व्यक्तियों पर पत्थर फेंकते हैं, ऐसा करना पारम्परिक समारोहों का एक भाग है जो "गोटमार मेला" के नाम से जाना जाता है । चूंकि पोला त्यौहार अगस्त के अंतिम सप्ताह में या सितम्बर के पहले सप्ताह में पड़ता है, इसलिए मानसून की वर्षा के कारण जैम नदी में आमतौर पर बाढ़ आई होती है इसलिए हमेशा यह संभावना बनी रहती है कि अचानक कोई डूब न जाए । इस त्यौहार के ऐतिहासिक और पारम्परिक महत्व के कारण "गोटमार मेला" में भाग लेने के लिए इस स्थान पर लोगों की भीड़ लग जाती है। वर्ष 1994 में गोटमार मेला 6-9-1994 को मनाया गया था । उस दिन नदी में बाढ़ आई हुई थी । "गोटमार" में भाग ले रहे व्यक्तियों द्वारा फेंके गए पत्थरों से घायल दो दर्शक अचानक नदी में गिर पड़े और तेजी से बह रही नदी में बहे जा रहे थे । यह देखकर, मेला देखने आए श्री अब्दुल वहीद खां नदी में कूद पड़े और उन्हें बचा लिया ।

2. श्री अब्दुल वहीद खां ने दो व्यक्तियों की जान जैम नदी में डूबने से बचाकर साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

19. मास्टर आर. के. नरजीत सिंह,
उर्फ जपन सिंह
पुत्र श्री आर. के. प्रियोजीत सिंह,
उरीपोक सौरबीन थिंगेल,
इम्फाल-795 001,
मणिपुर ।

दिनांक 10-10-1996 को प्रातः लगभग 8 बजे अपने घर से लगभग 80 फुट दूर एक तालाब के पास खेल रहे थे । उनमें से बड़ा बच्चा मास्टर आर. के. बिस्वजीत सिंह (5 वर्ष 8 माह) तालाब से कुछ रीड इकट्ठे करते हुए तालाब में गिर पड़ा और सहायता के लिए चिल्लाया । यह देखकर उसका छोटा भाई मास्टर आर. के. नरजीत सिंह उर्फ जपन सिंह उसकी सहायता के लिए दौड़ा । जब बड़ा भाई तालाब के किनारे को पकड़े हुए था, मास्टर आर. के. नरजीत सिंह उर्फ जपन सिंह ने उसे सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इतनी कम आयु के होते हुए भी मास्टर नरजीत सिंह उर्फ जपन सिंह ने अपने बड़े भाई की जान तालाब में डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

20. श्री नेहसखेमलांग रिनजाह,
पुत्र श्री पी. खरमालांग,
ग्राम स्मित,
ईस्ट खासी हिल्स,
शिलांग जिला,
मेघालय ।

दिनांक 9-8-1996 को अपराह्न लगभग 12.30 बजे जब श्री नेहसखेमलांग अपना टिफिन लेकर स्कूल वापिस लौट रहे थे तब उन्होंने लगभग 3 वर्ष के एक बच्चे को उमियू नदी में बहते हुए देखा । बरसात के मौसम में नदी लगभग 20 फुट चौड़ी और 7 से 8 फुट गहरी होती है । इसका किनारा ऊंचा, ऊबड़-खाबड़ और पथरीला है, क्योंकि यह शिलांग चोटी के पूर्वी ओर से ऊंची पहाड़ी से नीचे की ओर बहती है । पानी का बहाव तेज था और यह बल खाते हुए बह रही थी । वह बच्चा बेहोश था । उस बच्चे को नदी में बहते हुए देखकर, नेहसखेमलांग नदी में कूद पड़े और उफनती नदी के बल खाते हुए बहाव का सामना करते हुए बच्चे की जान बचाने में सफल हो गए । इस घटना को बचाए गए बच्चे की बहिन सहित तीन व्यक्तियों ने देखा । श्री नेहसखेमलांग उमियू नदी के पास रहते हैं । इससे पहले भी श्री नेहसखेमलांग ने तीन बच्चों की जान नदी में डूबने से बचाई थी—जून, 1995 में एक छह वर्षीय लड़के की तथा 1993 में एक छोटी लड़की और दस वर्षीय लड़के की ।

2. श्री नेहसखेमलांग रियनजाह ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए एक बच्चे की जान डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

21. मास्टर रामनगहिसंगा,
पुत्र श्री छन्दमा,
बुआरपुई,
लुंगलै जिला,
मिजोरम ।

दिनांक 8-12-1995 को श्री छन्दमा और उनका 10 वर्षीय पुत्र मास्टर रामनगहिसंगा जो धान की फसल के मौसम में अपने गांव से बहुत दूर झुम झोंपड़ी में रह रहे थे, अपनी झुम को पास जंगल में गए । अचानक एक बड़े जंगली भालू ने उन पर हमला कर दिया और श्री छन्दमा को पकड़ कर कई जगह काट खाया । यह देखकर मास्टर रामनगहिसंगा ने बिना किसी भय के अपनी दाब से उस भालू पर हमला कर दिया । भालू जख्मी होकर भाग गया । पिता और पुत्र के चिल्लाने की आवाज और भालू की दहाड़ सुनकर पास की झुमों से लोग घटनास्थल पर आ गए । घायल छन्दमा को बुआरपुई प्राईमरी स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया, जहां उन्हें 10 टांके लगाए गए और 12 दिन इलाज किया गया तथा पूरी तरह ठीक हो जाने पर 20-12-1995 को उन्हें छुट्टी दी गई ।

2 मास्टर रामनगहिसंगा ने अपने पिता की जान जंगली भालू से बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

22. कुमारी बबीता साहू,
द्वारा श्री धरुआ चरण साहू,
ग्राम मालीपुर,
डाकघर असुरेश्वर,
जिला कटक ।

दिनांक 13-5-1995 को 9.30 बजे सुबह जिला कटक के साकेपुर पुलिस थाने के अंतर्गत मालीपुर ग्राम में भारी वर्षा हुई और तूफान आया । कुमारी बबीता साहू ने दो वर्ष की कुमारी कनी और लगभग 5 वर्षीय कुमारी भागानी साहू नाम की दो लड़कियों को मालीपुर पंचायत के क्षेत्र में नालाब में डूबते हुए देखा । कुमारी बबीता साहू ने भारी वर्षा और तूफान में अपने जीवन की परवाह न करते हुए, डूब रही बच्चियों को चतुराई से बचाया ।

2. कुमारी बबीता साहू ने अपना जीवन खतरे में डालकर दो लड़कियों का जीवन बचाने में उत्कृष्ट साहस, तत्परता और बहादुरी का परिचय दिया ।

23. श्री दिवाकर (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री वासुदेव मल्लिक,
ग्राम मानापुर,
डाकघर/थाना कानपुर,
जिला कटक,
उड़ीसा ।

दिनांक 20-4-1993 को प्रातः 9.00 बजे जिला कटक के मानापुर ग्राम में फूस के बने एक घर में अचानक आग लग गई । दो छोटे बच्चे—कुमारी केरी बेहरा (8 वर्ष) और मास्टर कपिला बेहरा (7 वर्ष) जलते हुए घर में फंसे हुए थे । 11वीं कक्षा के विद्यार्थी श्री दिवाकर मल्लिक, जो पास ही रहते थे, जलते हुए घर में घुसे और उनकी जान बचाई । वह कीमती सामान निकालने के लिए पुनः घर में घुसे, तब छप्पर टूटकर उनके ऊपर गिर गया । वह बहुत अधिक जल गए । बाद में अग्नि शमन केन्द्र के कर्मचारियों ने उन्हें मलबे से बाहर निकाला । बाद में श्री दिवाकर मल्लिक की जलने के कारण मृत्यु हो गई ।

2. स्वर्गीय श्री दिवाकर मल्लिक ने जलते हुए घर में फंसे दो बच्चों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया जब वह अपने पड़ोसी का कीमती सामान निकाल रहे थे, तब दुर्भाग्यवश उनकी मृत्यु हो गई ।

24. कु. गीता दामोर,
पुत्री श्री लक्ष्मण लाल दामोर,
मार्फत श्रीमती दीनू दामोर,
राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय,
धरियावाद,
उदयपुर,
राजस्थान ।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की स्थानीय यूनिट द्वारा दिनांक 24-1-1996 को "बसन्त पंचमी" त्यौहार मनाने

के लिए "बिजासन माता" पर एक पिकनिक पार्टी का आयोजन किया गया। पिकनिक पार्टी की सदस्या, राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, धरीलाबाद की छठी कक्षा की छात्रा कु. मोनिका भिटलिया नदी पार करते समय अनजाने में फिसल गई और नदी में जा गिरी। नदी 466 वर्ग मील क्षेत्र में फैली हुई थी तथा "बिजासन माता" स्थल पर इसकी गहराई 17 फुट से 50 फुट के बीच भिन्न-भिन्न थी। यह देखकर अध्यापिका श्रीमती किरण गिरि गोस्वामी तथा प्रधानाचार्या, श्रीमती राजकुमारी भार्गव बालिका की जान बचाने हेतु नदी में कूद पड़ीं, परन्तु वे स्वयं ही डूबने लगीं। इस कठिन समय पर विद्यालय की एक बालिका कु. गीना दामोर (13 वर्षीय) अपनी स्वयं की जान को गंभीर जोखिम की परवाह किए बगैर नदी में कूद पड़ी तथा एक-एक करके सभी को सुरक्षित बचा लिया। 1996 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उसके साहसिक कार्य के लिए उसे प्रशंसा प्रमाण-पत्र तथा जिला स्तर का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद कु. गीना दामोर ने तीन व्यक्तियों की जान बचाने में असाधारण साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

25. श्री शान्ति लाल,
पुत्र श्री नाथ लाल,
शाहपुरा मोहल्ला,
समीप गिब्सन होस्टल,
ब्यावर, राजस्थान।

24-12-94 को प्रातः 10 बजे जब श्री शान्ति लाल अपनी दुकान पर बैठा था, तब उसने लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनी। वह चौराहे की ओर दौड़ा और देखा कि लोग पिन्हीं श्री सुगम लाल के घर के चारों ओर इकट्ठे हो रहे थे। मकान में आग लगी हुई थी तथा मकान की दूसरी मंजिल से काला घना धुआं निकल रहा था। पूछताछ करने पर उसे पता चला कि कोई श्रीमती भांवरी देवी आग में फंसी हुई है। एक गैस सिलिंडर में लीकेज के कारण आग लगी थी। एक महिला की जान को होने वाले खतरे के बारे में सुनकर जब श्री शान्ति लाल सीढ़ियां चढ़कर मकान की दूसरी मंजिल पहुंचा, तब उसने आग की और तीव्रता देखी और महसूस किया कि स्थिति बहुत गंभीर है। उसने तिरपाल का एक टुकड़ा लेकर मकान में प्रवेश किया तथा महिला को सुरक्षित बचा लाया। इस प्रक्रिया में श्री शान्ति लाल गंभीर रूप से जल गए। अपने घावों की परवाह न करते हुए उन्होंने पुनः मकान में प्रवेश किया और गैस सिलिंडर को उठाया तथा उसे मकान से बाहर फेंक दिया। इस प्रक्रिया में उन्हें जलने से घाव आ गए। तत्पश्चात अग्निशमन सेवा कर्मचारियों ने जो उस समय तक घटनास्थल पर पहुंच गए थे, गैस सिलिंडर की आग को बुझा दिया।

2. श्री शान्ति लाल ने अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए एक महिला की जान बचाने में साहस व तत्परता का परिचय दिया।

26. श्री विजयपाल सिंह (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री रिछपाल सिंह,
ग्रा. व डाकघर धाम्बू,
तहसील एवं पुलिस स्टेशन लक्ष्मणगढ़,
जिला सीकर, राजस्थान।

4-11-1995 को रात्रि के लगभग 9 बजे राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 11 पर स्थित लक्ष्मणगढ़ शहर जिला सीकर स्थित एक पैट्रोल पम्प पर चार सशस्त्र डकैतों ने जिनके पास रिवाल्वर तथा चाकू थे, लूटपाट के इरादे से हमला किया। घटना के समय, श्री विजयपाल सिंह, जो पैट्रोल पम्प पर नियुक्त थे, पैट्रोल पम्प पर स्थित केबिन में एक आगन्तुक श्री सांवताराम से बात कर रहे थे। डकैतों ने विजयपाल सिंह से सारी नकदी उन्हें सौंप देने को कहा। ऐसा न करने पर उन्होंने उसे जान से मार डालने की धमकी दी। श्री विजयपाल सिंह निहत्थे थे। तथापि, उसने असाधारण साहस दिखाया और वह चार में से दो डकैतों पर झपट पड़ा। तीसरे डकैत ने श्री सांवताराम पर हमला बोल दिया। श्री विजयपाल सिंह ने उसे बीच में ही रोक दिया तथा श्री सांवताराम को बचा लिया। श्री विजयपाल सिंह ने डकैतों से कड़ी टक्कर ली। इस संघर्ष के दौरान, डकैतों ने विजयपाल सिंह के शरीर पर चाकू से दो गंभीर घाव कर दिए वह जमीन पर गिर गया, परन्तु उसने दो डकैतों पर अपनी पकड़ ढीली नहीं की तथा वे भी उसके साथ गिर पड़े। तथापि चाकू के गंभीर घावों के कारण श्री विजयपाल सिंह की घटनास्थल ही मृत्यु हो गई। इस बीच श्री सांवताराम ने कुछ अन्य लोगों की मदद से, जो उस समय तक घटनास्थल पर पहुँच गए थे, एक डकैत को पकड़ लिया। अन्य तीन डकैत भाग गए। परन्तु बाद में पुलिस द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया।

2. श्री विजयपाल सिंह ने पैट्रोल पम्प को लूटने के प्रयास का विरोध करने तथा साथ-साथ चार में से दो डकैतों के साथ लड़ते हुए एक अन्य व्यक्ति की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया। इस प्रक्रिया में उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

27. मास्टर टी. मरियप्पन,
पुत्र श्री एस. थंगवेलु,
33/1 ईस्ट कार स्ट्रीट,
नागर कोइल-629 001,
कन्याकुमारी जिला,
तमिलनाडु।

14-5-95 को सेलम के निकट कन्याकुमारी एक्सप्रेस की एक बड़ी दुर्घटना हो गई रेलगाड़ी का वातानुकूलित डिब्बा पटरी से उतर गया तथा एक ओर लुढ़क गया। इसके परिणामस्वरूप, वातानुकूलित डिब्बे में यात्रा करने वाली सवारियां उसके अन्दर फंस गईं। नवीं कक्षा का छात्र मास्टर टी. मरियप्पन (15 वर्ष) अपने परिवार के सदस्यों के साथ उसी रेल में मद्रास से नागरकोइल तक की यात्रा कर रहा था। मास्टर टी. मरियप्पन

ने डिब्बे की खिड़की के शीशे तोड़ दिए तथा गंभीर रूप से घायल 15 व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद मास्टर टी. मरियप्पन ने रेलगाड़ी के पटरी से उतरे डिब्बे में फंसे 15 व्यक्तियों की जान बचाने में साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

28. मास्टर चन्दन सिंह,
पुत्र श्री भगवान दास,
मैषकर घाट (सर्किट हाउस),
कानपुर कैन्ट, उत्तर प्रदेश ।

10-8-1995 को सांय लगभग 4-5 बजे कुशल तैराक मास्टर चन्दन सिंह वायु भरी ट्यूब की सहायता से गंगा नदी में मैषकर घाट पर तैरने का अभ्यास कर रहा था । उसी समय उसी स्थान पर, जहां मास्टर चन्दन सिंह तैर रहा था, श्री संजय कुमार गुप्ता (आयु लगभग 20 वर्ष) नदी में स्नान कर रहा था । श्री संजय कुमार गुप्ता तैरना नहीं जानता था । अचानक उसका पैर फिसल गया और वह डूबने लगा । पानी की सतह पर मात्र उसके हाथ नजर आ रहे थे । हालांकि घटनास्थल पर अन्य लोग भी उपस्थित थे, परन्तु किसी ने भी उस डूबते हुए व्यक्तियों को बचाने की कोई कोशिश नहीं की । श्री गुप्ता की जान को खतरा भांपकर मा. चन्दन सिंह तैरकर श्री संजय कुमार गुप्ता के पास पहुंचा तथा वायु भरी ट्यूब की सहायता से उसको सुरक्षित बचा लिया ।

2. अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए अपने से बड़ी आयु के लड़के की जान बचाने में मा. चन्दन सिंह ने साहस व तत्परता का परिचय दिया ।

29. श्री कौस्तव राय बर्मन,
पुत्र श्री सुदर्शन राय बर्मन,
18, नजरूल सरनी, रानी पार्क,
डाकखाना हटलगाचा रोड, पु. स्टे. बारासात,
जिला उत्तरी 24-परगना,
कलकत्ता-700 079 ।

6 जुलाई, 1995 को प्रातः लगभग 2.30 बजे दो डकैतों ने श्री सुदर्शन राय बर्मन के घर का दरवाजा तोड़ डाला तथा उन पर बन्दूक और अन्य घातक हथियारों से हमला कर दिया तथा उनसे धन तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं की मांग की । श्री बर्मन ने जो कुछ उनके पास था, उसे सौंपने का वायदा किया । डकैत यह सोचकर नाराज हो गए कि श्री बर्मन ऐसा कहकर अधिक समय ले रहे हैं तथा वे उसे पीटने लग गए । एक डकैत ने अपनी बंदूक श्री बर्मन को शूट करने के लिए उस पर तान दी । यह देखकर श्री सुदर्शन राय बर्मन का पुत्र श्री कौस्तव राय बर्मन (आयु लगभग 12 वर्ष) जो उसी कमरे में मौजूद था तथा चुपचाप इस वारदात को देख रहा था, अपने पिता को निश्चित मौत से बचाने के लिए कूदकर बंदूक के सामने आ गया । उसी समय डकैत ने दो गोलियां चलाई, जिसमें से एक गोली कौस्तव राय की छाती के बांए भाग को चीरती हुई पार कर गई । दूसरी गोली निशाना चूक गई । इसी बीच श्री बर्मन ने पड़ौसी कौस्तव की मां श्रीमती शिखा बर्मन की चीखें तथा गोलियों की आवाज सुनकर उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़े । डकैतों को खाली हाथ भागना पड़ा । मास्टर कौस्तव को चिकित्सा सहायता के लिए पहले नजदीकी म्युनिसिपल हस्पताल ले जाया गया तथा बाद में कलकत्ता शहर के मेडिकल कालेज एवं हस्पताल ले जाया गया । कुछ दिन अस्पताल में रहने के बाद वह ठीक हो गया ।

2. अपनी अल्पायु में मास्टर कौस्तव राय बर्मन ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए अपने पिता की जान बचाने में साहस एवं तत्परता का परिचय दिया ।

30. श्री मुमताज अहमद खान,
ई-22, गफूर नगर,
जामिया नगर,
नई दिल्ली-110 025 ।

3-11-1995 को पी.ए.सी. कार्मिकों को ला रही एक बोट ओखला बराज के समीप यमुना नदी में डूब गई । आठ व्यक्ति तत्काल डूब गए, जबकि एक व्यक्ति डूबने से बचने हेतु हताशपूर्ण प्रयास कर रहा था । यह देखकर, जामिया मिडल स्कूल में अध्यापक श्री मुमताज अहमद खान, जो कि कुशल तैराक और गोताखोर थे, तथा जिन्होंने बहादुरी के अनेक कारनामे किए हुए थे, नदी में कूद पड़े तथा तैरकर पी.ए.सी. कार्मिक के पास पहुंचे तथा उसे सुरक्षित बचा लिया । तत्पश्चात् वे डूबकर मर चुके आठ व्यक्तियों में से सात व्यक्तियों के शव भी बाहर निकाल लाए ।

2. श्री मुमताज अहमद खान ने एक पी.ए.सी. कार्मिक को यमुना में डूबने से बचाने में साहस व तत्परता का परिचय दिया ।

31. श्री अब्दुल कादर पल्लीपुरम,
पल्लीपुरम,
अगाट्टी-682 553,
लक्षद्वीप ।

लक्षद्वीप के समुद्र में बन्दरगाह सुविधाओं के अभाव के कारण विशेषतः दक्षिण-पश्चिम मानसून अवधि के दौरान तेज हवाओं एवं उच्च लहरों के कारण जहाजों से यात्रियों के उतरने-चढ़ने में बहुत कठिनाई होती है । यांत्रिक बोटों का संचालन भी सुरक्षित नहीं है । मानसून अवधि में जब समुद्र तूफानी हो जाता है, तब केवल छोटे कन्ट्री क्राफ्ट ही प्रयोग में लाए जाते हैं । 17-8-96 को रात्रि 2 बजे "एम.वी. भारत सीमा" अगाट्टी द्वीप के पूर्वी किनारे पर पहुंचा और जहाज पर सवार यात्रियों को उतारने/चढ़ाने के काम में 12 देसी जलयान लगे हुए थे । तेज हवाओं के कारण लगून भारी ब्रेकर्स आ गए थे, जिसके परिणामस्वरूप जहाज पर यात्रियों के पोतारोहण के बाद वापिस आते समय लगून के प्रवेश स्थल पर एक कन्ट्री क्राफ्ट डूब गया । बचाव कार्य किए गए तथा घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया । द्वीप के एक गरीब व्यक्ति, श्री अब्दुल कादिर पल्लीपुरम ने जो स्वयं

बचाव कार्य में लगा हुआ था, एक 5 वर्षीय लड़की कु. रूखसाना के.सी. को डूबने से बचा लिया । जहाज के एक यात्री, जिसका नाम अट्टाकोया था और जो लापता था, उसके शव को बाद में निकाल लिया गया । श्री अब्दुल कादर ने 1995 में जब एक नाव अगाट्टी द्वीप के प्रवेश द्वार पर डूब गई थी, एक गूंगे और बहरे लड़के मास्टर मोहम्मद हुसैन लातानक्कल की प्राण रक्षा भी की थी ।

2. श्री अब्दुल कादर पल्लीपुरम ने एक एक लड़की और एक लड़के को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

32. सं. 75327-वाई सर्जन कमान्डर,
धनंजय कृष्णराव वासुनकर,
105-शीतल अपार्टमेन्ट्स,
406 सावरकर रोड,
**शिवाजीनगर, बेलगांव-590 005,**
कर्नाटक ।

5-12-95 को रात के लगभग 8.45 बजे सब-मैरिनर तथा अन्डरवाटर औषध विशेषज्ञ, सर्जन कमांडर धनंजय कृष्णराव वासुनकर (सं. 75327-वाई) ने आई.एन.एस. वेन्डुरथी में अपनी प्रिन्सीपल मेडिकल आफिसर की नियुक्ति के दौरान वैलिंगडन द्वीप कोच्चि में पोतारोहण जेट्टी से दूर मथनचेरी कैनल में दुर्घटनावश एक मारुति जेन कार को गिरते देखा। उन्होंने अंधेरे में कार से पानी में गिरती हुई एक महिला और एक बच्चे की दुखभरी चीखें सुनी । स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, वे तुरन्त पानी में कूद पड़े तथा डूबती हुई महिला और बच्चे को सुरक्षित बचाकर किनारे पर ले आए । महिला के यह बताने पर कि उनके पति श्री जाय पुथुकरण, जो कार चला रहे थे, डूब गई कार में फंसे हुए हैं । श्री वासुनकर पुनः कैनल में कूद पड़े और उन्होंने देखा कि महिला का पति डूबी हुई कार में बुरी तरह फंसा हुआ है । उन्होंने आस-पास से मछली पकड़ने वाली कुछ नौकाओं को बुलवाया तथा गोताखोरी अभियान की व्यवस्था की । उन्होंने स्वयं भी कैनल में गोता लगाया तथा कार की खिड़की के शीशे तोड़कर कुछ टूटी हुई फिटिन्गस की सहायता से ड्राईवर को बाहर निकाला । डूबी कार में फंसे व्यक्ति में जीवित होने का कोई चिन्ह नजर नहीं आ रहा था, क्योंकि उसके शरीर में काफी पानी चला गया था । उसकी सांस रुक गई थी तथा उसके मुंह तथा नाक से झाग निकल रहा था । ऐसी स्थिति में कुछ सैकिन्डों के विलम्ब से उसकी जान जा सकती थी। श्री वासुनकर ने उसे तत्काल कृत्रिम श्वास देना प्रारम्भ कर दिया तथा उसकी छाती की मालिश करनी शुरू कर दी । इस उपचार से श्री जाय पुथुकरन की चेतना धीरे-धीरे लौटने लगी । श्री पुथुकरन को (उनकी पत्नी व बच्चे समेत) तत्काल नजदीक के पोर्ट ट्रस्ट अस्पताल पहुंचाया गया, जहां श्री वासुनकर के निर्देशन में उन्हें सामान्य स्थिति में लाया गया ।

2. सर्जन कमांडर (सं. 75327-वाई) धनंजय कृष्णराव वासुनकर ने स्वयं गंभीर रूप से घायल होकर भी तीन व्यक्तियों की डूबने से जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

33. सं. 4176211 सिपाही पूरण सिंह,
ग्राम झालाहाट,
डाकखाना धाम देवल,
तहसील पानीखेत, जिला अल्मोड़ा,
उत्तर प्रदेश ।

सिपाही पूरण सिंह अल्मोड़ा जिले में ग्राम झालाहाट में छुट्टी पर था । दिनांक 15-2-1995 को जब वह गांव के मंदिर की ओर जा रहा था, तो उसने देखा कि बड़ी संख्या में लोग राम गंगा नदी के किनारे इकट्ठे होए हुए हैं तथा वे सहायता के लिए चिल्ला रहे हैं । उसने दो महिलाओं को डूबते और जीवन रक्षा हेतु संघर्ष करते देखा । उसी समय उसने उनको बचाने के लिए एक और व्यक्ति को नदी में कूदते हुए भी देखा परन्तु पानी के तेज बहाव तथा पानी की गहराई के कारण उस व्यक्ति ने भी डूबना शुरू कर दिया था । सिपाही पूरण सिंह अपनी जान की परवाह न करते हुए डूबते व्यक्तियों को बचाने हेतु नदी में कूद पड़ा । उसने एक-एक करके सभी तीनों को मौत के मुंह से बचा लिया ।

2. सिपाही पूरण सिंह ने अपनी जान को गंभीर खतरे में डालकर तीन व्यक्तियों की डूबने से जान बचाने में साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

34. जी. डी. 172035-वाई, श्री श्रीनिवास ओम,
गांव मोवरापार,
तहसील खलीलाबाद,
डाकखाना-नखीरा, जिला-बस्ती,
उत्तर प्रदेश ।

दीपक परियोजना के उत्खनन मशीनरी प्रचालक, श्री श्रीनिवास को मोनाली-सरचू सड़क पर गर्मियों में पड़ी बर्फ को हटाने के काम में लगाया गया था ।

2. 15 मई, 1995 को 11.45 बजे मनाली-सरचू सड़क पर 163.00 कि. मी. की दूरी पर अपनी मशीन चलाते समय श्री श्रीनिवास के अचानक हिमस्खलन शुरू होने तथा इसके साथ बड़े-बड़े शिलाखंडों के नीचे खिसकने की आवाज सुनी, जो ऐसी जगह गिरने वाले थे, जहां एक दिहाड़ी मजदूर कर्म बहादुर काम में लगा हुआ था । एक शिलाखंड श्री कर्म बहादुर को लगा, जिससे उसकी दाहिनी टांग की हड्डियां बिखर रूप से टूट गईं । यह देख कर श्री श्रीनिवास ने श्री कर्म बहादुर को तुरन्त उठा लिया और घाटी में लुढ़क गया । कुछ ही सैकड़ों में एक बहुत बड़ा शिलाखंड उसी स्थान पर गिरा, जहां श्री श्रीनिवास द्वारा उठाए जाने से पूर्व श्री कर्म बहादुर घायल अवस्था में पड़ा हुआ था । अगर उसने समय पर कार्रवाई न की होती, तो श्री कर्म बहादुर की मौत निश्चित थी । इसके बाद, श्री कर्म बहादुर को तत्काल जिला अस्पताल, केलांग पहुंचाया गया ।

3. इस प्रकार, श्री श्रीनिवास ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए श्री कर्म बहादुर की जान बचाने में असाधारण साहस, मानवीय दृष्टिकोण, सूझ-बूझ और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

35. मास्टर अनिंद्य भल्ला,
बी-16/2, रमेश नगर,
(डबल स्टोरी),
नई दिल्ली-110015

दिनांक 14-2-1996 को रात्रि के लगभग 10.45 बजे डा. ए. पी. भल्ला और उनका पुत्र अनिंद्य (10-1/2 वर्ष) किसी शादी में सम्मिलित होने के बाद घर लौट रहे थे कि एक तेज गति से आ रहे ट्रक ने अचानक उनकी कार के दाहिने हिस्से में टक्कर मार दी । शीघ्र ही उन दोनों ने एक दूसरे की कार के मध्य में खींचने का प्रयास किया । तभी ट्रक ने उन्हें दुबारा टक्कर मारी । इस बार टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि डा. भल्ला हिल भी नहीं सके । तथापि, अनिंद्य उन्हें तत्काल खींच कर कार के बीच वाले हिस्से में ले आया । इस टक्कर के साथ ही कार ट्रक के साथ घिसटती चली गई, इसका दाहिना हिस्सा टूट कर अलग हो गया तथा बोनट भी टूट-फूट गया । जब ट्रक एक सड़क विभाजक पर चढ़ कर एक बिजली के खंभे से टकराया, तब जाकर कार रुकी । ड्राइवर घटनास्थल से भाग गया । डा. भल्ला के शरीर से अत्यधिक खून बह रहा था और उनका हाथ दरवाजे और स्टीयरिंग व्हील के बीच फंस गया था और खिड़कियों के शीशे टूट कर उसमें धंस गए थे । एक क्षण भी गंवाए बिना अनिंद्य ने अपने पिता की बाह के चारों ओर एक बड़ा रूमाल बांध दिया और उन्हें खींच कर कार से बाहर लाने का प्रयास किया । जब वह ऐसा करने में सफल नहीं हो पाया तो वह सड़क के बीच में खड़ा हो गया और गुजरते वाहनों को सहायता के लिए रुकने का संकेत देने लगा । उसे उत्तेजित रूप से अपने हाथ हिलाते हुए देखकर दो कारें रुकी । अनिंद्य ने उनके साथ मिलकर अपने पिता को कार से बाहर निकाला और उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान पहुंचाने का उनसे अनुरोध किया । स्थान छोड़ने से पहले, उसने अपने पिता का बटुआ, चश्मा, घड़ी इत्यादि समेट लिए । अस्पताल पहुंच कर उसने डाक्टरों और नर्सिंग स्टाफ को बताया कि डा. भल्ला अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के संकाय सदस्य हैं और वे उनका इलाज करें (तब तक डा. भल्ला के शरीर से काफी खून बह चुका था) । जब यह सुनिश्चित हो गया कि उसके पिता की देखभाल की जा रही है, तब उसने टेलीफोन पर दुर्घटना और अपने पते-ठिकाने की सूचना परिवार के सदस्यों को दी ।

2. मास्टर अनिंद्य भल्ला ने एक दुर्घटना में अपने पिता की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

36. मास्टर दुलाल दास,
द्वारा श्री मनोरंजन दास,
गांव बागबेर,
थाना-कालमचौरा,
पश्चिम त्रिपुरा-799102

19-2-1996 को रात्रि लगभग 1 बजे हथियारबंद डकैतों के एक गिरोह (जो संख्या में लगभग 15-16 थे) ने बागबेर गांव पर धावा बोल दिया । उनमें कुछ जबरदस्ती श्री मनोरंजन दास के घर में घुस गए और उन्हें तथा श्री सत्यरंजन दास को जख्मी कर दिया और उनके मामा श्री हीरालाला दास की हत्या कर दी । इसके पश्चात, बदमाश गौशाला में घुसे, जहां लगभग 15 वर्षीय मास्टर दुलाल दास (मनोरंजन दास का छोटा भाई) सो रहा था । जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, दुलाल जग गया । डकैतों ने एक रस्सी से उसे बांधने की कोशिश की । तथापि दुलाल ने उसे बख्श देने और जो कुछ वे चाहते हों उसे ले जाने का निवेदन किया । बच्चे पर दया करते हुए, डकैत वहां से जाने के लिए मुड़े । जैसे ही डकैत जाने लगे, दुलाल ने एक दाव उठा लिया और उनमें से एक पर हमला कर दिया और उसकी गर्दन पर गहरा घाव कर दिया । घायल व्यक्ति दर्द से कराह उठा । इसके बाद दुलाल ने गिरोह के 2-3 अन्य डकैतों पर हमला कर उन सभी को घायल कर दिया । इसका परिणाम यह हुआ कि इस शोर शराबे के कारण गांव के बाकी लोग जाग गए और वे घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े । इसके फलस्वरूप डकैतों के पांव उखड़ गए और आशंका है कि अंधेरे का फायदा उठाकर वे बंगलादेश की सीमा पार चले गए हैं । वे अपने कुछ हथियार और गोला-बारूद पीछे छोड़ गए ।

2. मास्टर दुलाल दास ने डकैतों से लड़ने और उन्हें भागने के लिए बाध्य करने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

37. मास्टर ज्योजी फ्रांसिस,
पुत्र श्री फ्रांसिस,
एमथेरी हाउस,
डाकखाना पुथेनचिरा,
जिला-त्रिसूर, केरल ।

28-7-1995 को प्रातः लगभग 9.00 बजे एच.एफ.एल.पी. स्कूल, पुथेनचिरा की कक्षा 4 की छात्रा कुमारी सुखा बर्गीज अपने स्कूल जाते समय लकड़ी का एक पुल पार करते वक्त अचानक एक नहर में गिर गई । पानी की तेज धार उसे बहा ले गई और वह डूबने लगी । इसे देखकर यू. पी. गवर्नमेन्ट स्कूल की कक्षा 8 का एक छात्र मास्टर ज्योजी फ्रांसिस ने, जो उस रास्ते से गुजर रहा था, भंवरयुक्त पानी में छलांग लगा दी और लड़की को सुरक्षित बचा लिया ।

2. मास्टर ज्योजी फ्रांसिस ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना एक लड़की को नहर में डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

38. कु. हिमाकुन्तला वसुधा,
पुत्र श्री एच. करूपनंदम,
द्वारा सं. 9/188 कपू वीडी,
मन्नूर गांव, डा. राजमपुर,
जिला कड़प्पा,
आन्ध्र प्रदेश-51615

1-9-1995 को सायं लगभग 5.35 बजे कर्नाटक राज्य सड़क परिवहन निगम (मांड्य डिपो) की एक बस एक घने जंगल से होकर गुजर रही थी। अचानक यह एक घाटी में गिर गई। इस क्षेत्र में बाढ़ आया हुआ था। इसे देख कु. हिमकुन्तला वसुधा (8 वर्ष), जो मंद बुद्धि बालिका है, ने आगे बढ़कर एक दो वर्षीय बालक को बचा लिया।

2. अपनी विकलांगता के बावजूद, कु. हिमकुन्तला वसुधा ने एक दो वर्षीय बालक की जान बचाने में साहस का परिचय दिया।

39. कु. मेकलसुता सिंह,
गांव शुकरवाड़ा,
तहसील बबाई,
जिला होशंगाबाद,
मध्य प्रदेश।

31-5-1996 को नर्मदा नदी के छिछले मुहाने पर स्नान करते समय कु. मेकलसुता सिंह ने कुछ महिलाओं को तेज चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनी। नदी के गहरे जल में कु. जयश्री नाम की लड़की को जीवन के लिए संघर्ष करते देखकर तैरना न आने के बावजूद कु. मेकलसुता सिंह नदी में कूद पड़ीं और उसने लड़की को पकड़ लिया। जैसे ही उसने लड़की को पकड़ा, लड़की ने भी उसे कसकर पकड़ लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि दोनों डूबने लगीं। कु. मेकलसुता सिंह ने किसी तरह अपने आपको कु. जयश्री की पकड़ से छुड़ाया, परंतु कु. जयश्री ने दुबारा कु. मेकलसुता सिंह के बाल पकड़ लिए। इस प्रक्रिया में कु. मेकलसुता के पेट में काफी पानी चला गया। इस पर भी कु. मेकलसुता ने साहस और धैर्य नहीं खोया तथा कु. जयश्री के जीवन की रक्षा के लिए एक और प्रयास किया और उसे छिछले पानी की ओर खींच लाई तथा उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने में सफलता प्राप्त की। हालांकि कु. मेकलसुता कु. जयश्री को बचाने में सफल रही, परंतु वह खुद डूबने लगीं। इसी समय नदी में स्नान के लिए आया हुआ, श्री नरेन्द्र सिंह नामक एक व्यक्ति बेहोश कु. मेकलसुता को उठाकर नदी के किनारे ले आया। बाद में चिकित्सीय सहायता से वह होश में आ गई।

2. कु. मेकलसुता सिंह ने, कु. जयश्री की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

40. मास्टर एल. नरेश कुमार सिंह,
थौबाल खांगनाटवा,
थौबाल-795138
मणिपुर।

19-11-1995 को नरेश कुमार सिंह (15 वर्ष 10 माह) और उसकी मां किसी रिश्तेदार के घर गए हुए थे। वीडियो कैसेट देखते समय, उसने घर के पास के एक तालाब की दिशा में तेज छपछपाने की आवाज सुनी। वह दौड़कर घटना स्थल पर पहुंचा और उसे पता चला कि 2-3 वर्ष का केनेडी नामका एक बालक गायब है, जो तालाब के आसपास खेल रहा था। मास्टर नरेश कुमार ने तत्काल तालाब में छलांग लगा दी और बच्चे का पता लगा लिया। जब वह बच्चे के निकट पहुंचा तो बच्चा उससे कसकर लिपट गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि दोनों डूबने लगे। उसने किसी तरह ऊपर की ओर तैरने में सफलता पा ली और बच्चे सहित तैरकर सुरक्षित स्थान पर पहुंच गया। चूंकि, बच्चा उस समय बेहोश था, इसलिए मास्टर नरेश ने उसके पेट से पानी निकाल कर तथा उसे कृत्रिम श्वांस देकर होश में ले आया। होश में आने के बाद मास्टर केनेडी ने रोना शुरू कर दिया। रोने की आवाज सुनकर राहगीर उनकी सहायता के लिए आए और आवश्यक उपचार के लिए उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गए।

2. मास्टर एल. नरेश कुमार सिंह ने अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए 2-3 वर्षीय बालक को तालाब में डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

41. मास्टर रमेश,
द्वारा प्रेसीडेंट प्रेस क्लब,
गांव सिरान, डाकखाना गौचर
जिला चमोली गढ़वाल,
उत्तर प्रदेश।

4-10-1995 को श्री रमेश (10 वर्ष) और उसका 8 वर्षीय दोस्त दीपू चरने के लिए गई अपनी गायों को वापस लाने के लिए जंगल जा रहे थे। एकाएक एक तेंदुए ने मास्टर रमेश पर हमला बोल दिया। मास्टर रमेश अचानक हमले से बिल्कुल नहीं घबराया तथा उसने जानवर की छाती पर अपनी टांग से दो-चार टक्कर मारी ताकि उसके शिकंजे से स्वयं को स्वतंत्र करा सके। अपने दोस्त को जानवर के साथ लड़ते देखकर, मास्टर दीपू घटना के बारे में गांव वालों को सूचित करने के लिए गांव की ओर वापस भागा। मास्टर रमेश जानवर से लगातार लड़ता रहा और अंत में जानवर के शिकंजे से मुक्त होने में सफल हो गया। तेंदुआ जंगल में भाग गया। जानवर के साथ लड़ते हुए मास्टर रमेश की जांघ में गहरी चोटें आई तथा उपचार के लिए उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा।

2. मास्टर रमेश ने स्वयं को तेंदुए से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

42. मास्टर संतोष कुमार मुदली,
नीमापारा बाजार,
डाकखाना नीमापारा,
पुरी-725106,
उड़ीसा ।

20-4-1995 को चार लड़कियां अर्थात् मल्ली, कल्पना, उमवक्ता और मनू, जो सभी लगभग 7-8 वर्ष की आयु की थीं, कुशभद्रा नदी में स्नान कर रही थीं, तभी वे फिसलकर गहरे जल में गिर गईं । वे सहायता के लिए चिल्लाईं । उनकी चीखें सुनकर मास्टर संतोष मुदली (11 वर्ष) जो नहाने के लिए नदी पर पहुंचा ही था, ने उग्र वेग वाली नदी में छलांग लगा दी और तीन बच्चों की जान बचाने में सफलता प्राप्त की । तथापि, कु. मनु जो उस समय तक पानी की धार में बहकर काफी दूर जा चुकी थी, इसलिए उसका पता नहीं चल सका और वह डूबकर मर गई । उसकी लाश को बाद में उन अग्निशमन सेवा के कार्मिकों द्वारा बाहर निकाला गया, जो मास्टर संतोष कुमार मुदली द्वारा घटना के बारे में सूचित किए जाने पर घटनास्थल पर पहुंचे थे ।

2. मास्टर संतोष कुमार मुदली ने अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए तीन लड़कियों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

43. मास्टर श्याम बाबू,
गांव और थाना कालीपीठ,
जिला राजगढ़,
(ब्यावारा), मध्य प्रदेश,
पिन-465661 ।

26-5-1995 को सायं लगभग 4.30 बजे कुछ लोग कालीपीठ के नजदीक एक कुएं की बोरिंग कर रहे थे, तभी अचानक मशीन का कंप्रेसर पाइप भारी आवाज के साथ फट गया। इसके प्रभाव से घटनास्थल पर मौजूद मास्टर श्याम बाबू (लगभग 10 वर्षीय) जमीन पर गिरने से पूर्व भूमि से लगभग 30 फुट ऊंचाई तक उछाल दिया गया । आवाज सुनकर कुछ दूरी पर काम कर रहे आठ आदमी बच्चे की ओर दौड़े । अपनी चोटों की परवाह न करते हुए, मास्टर श्यामबाबू ने उन्हें मशीन के बहुत पास न आने की चेतावनी दी तथा भाग जाने के लिए इशारा किया । उसने पास में ही बंधे हुए मवेशियों को भी खोल दिया। उसकी चेतावनी के बावजूद, पांच मजदूर मशीन के पास पहुंच गए । उसी समय मशीन का डेटोनेटर फट गया और पांच में से चार व्यक्तियों की तत्काल मृत्यु हो गई । पांचवें व्यक्ति श्याम बाबू के पिता ने अस्पताल में दम तोड़ दिया ।

2. अपनी घायलावस्था और छोटी उम्र के बावजूद मास्टर श्याम बाबू ने मवेशियों की जान बचाने में पहल की और कर्मियों की जान बचाने के लिए साहसिक प्रयास किया ।

44. मास्टर सईद अमीर पाशा,
गांव सोमासिला, कोल्लापुर,
मंडल-509102
महबूब नगर जिला,
आन्ध्र प्रदेश ।

20-2-1996 को कोल्लापुर के श्री सत्य सांई स्कूल के 21 छात्र अपने कक्षा अध्यापक के साथ पिकनिक मनाने के लिए सोमासिला गांव गए । सायं लगभग 3.30 बजे 10 छात्र और उनका अध्यापक कृष्णा नदी में नौकायन के लिए गए । लगभग 75 गज की दूरी तय करने के बाद उनकी नाव अचानक उलट गई । इसे देखकर किनारे पर बैठा सईद अमीर पाशा दूसरी नाव में सवार होकर घटनास्थल की ओर दौड़ पड़ा । चूंकि नाव में कोई पैडल नहीं था, इसलिए इस प्रयोजनार्थ उसने अपने हाथों का प्रयोग किया । घटनास्थल पर पहुंच कर वह बचाव कार्य में लग गया और दो लड़कियों तथा अध्यापक की जान बचाने में सफल हो गया, जबकि अन्य तीन छात्र तैरकर किनारे पहुंच गए। किन्तु शेष पांच छात्र डूब गए ।

2. मास्टर सईद अमीर पाशा ने दो लड़कियों और उनके अध्यापक को कृष्णा नदी में डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

गिरीश प्रधान
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

---

गृह मंत्रालय

अन्तर्राज्य परिषद् सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 10 मार्च 1997

सं. 8/1/96-अ.रा.प.—दिनांक 4 सितम्बर, 1996 के अधिसूचना संख्या 43/2/91-अ.रा.प. के क्रम में प्रधान मंत्री ने अनुमोदन किया है कि केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् के निम्नलिखित सदस्य अब अंतर्राज्य परिषद् के स्थाई आमंत्रित सदस्य होंगे :—

(1) उद्योग मंत्री

(2) मानव संसाधन विकास मंत्री

जयन्त सन्याल
परामर्शी
अन्तर्राज्य परिषद्

कल्याण मंत्रालय

(प्रेम डिवीजन)

नई दिल्ली, दिनांक 12 मार्च 1997

संकल्प

फा. सं. 5-8/96-(आर) प्रेम—भारत सरकार की दिनांक 24-2-95 की अधिसूचना सं. 1-88/93-(आर) प्रेम के अधिक्रमण में, कल्याण मंत्रालय की समाज कल्याण संबंधी संयुक्त सलाहकार समिति का पुनर्गठन कल्याण मंत्रालय के निम्नलिखित पहलुओं पर सलाह देने के लिए किया गया है :—

(1) समाज कल्याण, समाज नीति तथा सामाजिक विकास में अनुसंधान का संवर्धन/समन्वय तथा उपयोग, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अल्पसंख्यकों तथा पिछड़े वर्गों का कल्याण,

(2) उपर्युक्त क्षेत्रों में अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान,

(3) व्यक्तियों/संगठनों से प्राप्त विभिन्न अनुसंधान प्रस्तावों/परियोजनाओं की जांच तथा अनुमोदन, तथा

(4) उपर्युक्त क्षेत्रों में अनुसंधान में वृद्धि से संबंधित अन्य मामले ।

2. समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

अध्यक्ष (पदेन)

(1) अपर सचिव, भारत सरकार
कल्याण मंत्रालय

सदस्य (पदेन)

(2) संयुक्त सचिव (एम. एण्ड बी. सी.)
कल्याण मंत्रालय

(3) संयुक्त सचिव (पी. एण्ड एस. डी.)
कल्याण मंत्रालय

(4) संयुक्त सचिव (एस. सी. डी.)
कल्याण मंत्रालय

(5) संयुक्त सचिव (टी. डी.)
कल्याण मंत्रालय

(6) संयुक्त सचिव (एच. डब्ल्यू)
कल्याण मंत्रालय

(7) वित्तीय सलाहकार (कल्याण)
कल्याण मंत्रालय

(8) भारत के महापंजीयक,
गृह मंत्रालय

(9) महानिदेशक,
केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन

(10) सलाहकार (एस. डी. एण्ड डब्ल्यू पी.)
योजना आयोग

सदस्य

(11) श्रीमती शोभना भारतीय,
कार्यपालक निदेशक,
हिन्दुस्तान, टाइम्स,
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली

(12) श्री डी. पेकेम,
कुलपति,
उत्तर-पूर्वी हिल विश्वविद्यालय, शिलांग,
मेघालय

(13) प्रो. जी. एस. गांधी,
समाज विज्ञानी,
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई महरौली रोड,
नई दिल्ली

(14) सुश्री मधु केशवर,
सम्पादक, मानुषी,
सी-202 लाजपत नगर (भाग-1),
नई दिल्ली-110024

(15) श्री आई. एस. राव, आईएएस (सेवानिवृत्त)
एच. आई. जी. 2, अंकुर कालोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल-16
मध्य प्रदेश

(16) श्री जे. बी. राजू,
अध्यक्ष,
दलित सेना (ए.पी. ब्रांच),
मकान संख्या 262, सलार जंग कालोनी,
हैदराबाद

(17) डा. काशीनाथ जी, जल्मी,
विधायक,
विपक्ष के नेता गोवा विधान सभा,
सचिवालय, पणजी

(18) श्री करतार सिंह,
अलकला एस्टेट, पो.आ. गुरू बेयर, पी.एस. बरारी
जिला कटिहार, बिहार

(19) डा. (सुश्री) सोफिया खान,
51, आफियाना, जान बापटीस्ट रोड,
बान्द्रा (प.), मुम्बई, महाराष्ट्र

(20) प्रो. खलीक अहमद निजामी,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

(21) श्री एस. के. रूंगटा,
अध्यक्ष,
राष्ट्रीय दृष्टिहीन परिसंघ, 2322 लक्ष्मीनारायण,
स्ट्रीट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055

(22) डा. शेक मोहिउद्दीन,
इस्लामपेट, बापतला, गुन्टूर जिला,
आन्ध्र प्रदेश

(23) श्री राम आसरे विश्वकर्मा,
अधिवक्ता,
111/103, पुराना ममफोर्डगंज,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

(24) श्रीमती मंजीत सोढिया,
प्रधानाचार्य, गवर्नमेंट महिला कालेज,
लुधियाना, पंजाब

सदस्य सचिव (पदेन).

(25) संयुक्त निदेशक (प्रेस),
कल्याण मंत्रालय

3. इस समिति के सदस्यों का कार्यकाल 01 जनवरी, 1997 से 31 दिसम्बर, 1998 तक दो वर्ष का होगा। तथापि, सरकार इस समिति का पुनर्गठन कभी भी कर सकती है।

4. इस समिति की सदस्यता के लिए किसी परिलब्धि का भुगतान नहीं किया जाएगा। तथापि, सरकारी सदस्य इस कार्य के संबंध में उनके द्वारा की गई यात्राओं के लिए उनके अपने-अपने कार्यालयों से उन पर लागू नियमों के अनुसार यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता पाने के हकदार होंगे। समिति के गैर-सरकारी सदस्य बैठकों में भाग लेने के लिए अपनी यात्राओं के लिए भारत सरकार के प्रथम ग्रेड के अधिकारियों को स्वीकार्य यात्रा/दैनिक भत्ता पाने के हकदार होंगे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

आनन्द बोर्डिया
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 25th March 1997

No. 24-Pres/97.—The President is pleased to approve the award of 'Sarvottam Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned person :—

1. Km. Shally Khanna,
C/o Smt. Shobha Khanna,
LIG Flat No. 61/B,
Rakkar Colony, Una-174 303,
Himachal Pradesh.

On 7-6-1995, fire broke out in the house of Shri Gopal Khanna. The members of the family rushed out for safety. On finding that their 1½ year son Master Rishab was trapped inside, they shouted for help. At this juncture Km. Shally Khanna, who was visiting the family and had also come out of the house alongwith others, re-entered the house but could not locate the child in the smoke filled room and came out unsuccessfully. On seeing Km. Shally without Master Rishab, Smt. Khanna started crying for help. Unable to stand the mother's agony Km. Shally made another attempt to retrieve the child and succeeded in locating the unconscious child and brought him out safely. In the process, she was exhausted and lost consciousness and fell down. The people gathered on the spot revived her.

2. Km. Shally showed exceptional courage, promptitude and compassion in saving the life of a child unmindful of the grave risk to her own life.

G. B. PRADHAN
Jt. Secy.

No. 25-Pres/97.—The President is pleased to approve the award of 'Uttam Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Shri Ashok Gyanoba Puri,
C/o Shri Baburao Gyanoba Giri,
Kole Nagar Front of Koyana Sub Station,
Latur, Tel. District—Latur,
Maharashtra

On the night of 24-5-1994, Shri Ashok Gyanoba Puri, Sectional Engineer accompanied by three others, was travelling in a jeep for water controlling of Canal of Jayakwadi Project. The road is too narrow and is used for walking only. It is not used for vehicles. Because of the narrow width of the road, ruts and clods formed on the surface of the road, the Jeep slipped and fell into the fast flowing Canal. It turned upside down twice. It was feared that all the people in the jeep had been drowned. In such a critical situation, Shri A. G. Puri managed to get out of the Jeep. He was injured in the head (scalp) and there was lot of bleeding from the injury. Despite this he engaged himself in rescue operation and succeeded in rescuing all the three persons trapped in the jeep single handed. Since all the three persons could not swim and men in a confused state of mind due to shock. Shri Puri found it difficult to bring them to safety.. The Canal side was full of moss. He collected four large handkerchiefs of 1'×2.5' in size (called 'Bagayetdar' in Maharashtra) and tied them together. With the help of the rode made of these handkerchiefs, all the three persons came out to safety by stepping over the right foot of Shri Puri as a support.

2. Shri Ashok Gyanoba Puri showed exceptional presence of mind, courage and promptitude in saving the lives of three persons unmindful of the risk to his own life.

2. GS-121155X Charge (Posthumous)
Mecnanic Baljit Singh Kang,
Street No. 2,
Dasnmesh Nagar, Barnala Road,
Dhuri, P. O.—Dhuri,
District Sangrur, Punjab,
Pin-148 024.

On April 18, 1996, GS-121155X, Charge Mechanic, Baljit Singh Kang, was detailed to carry out repairs of the water pump deployed at 0 km on Pasakha-Manitar road. After finishing the repairs, he loaded the pump with the help of labourers into a vehicle for shifting it to another work site. The labourers also sat in the vehicle. While the vehicle was crossing the Bailey Bridge at Pasakha, Charge Mechanic Baljit Singh Kang noticed that the exhaust pipe of the water pump was about to touch the sagging overhead high tension electric supply line passing over the bridge. He rushed towards the vehicle and managed to stop it without indicating the deadly threat, which avoided a chaos among the occupants of the vehicle. The timely presence of mind shown by Charge Mechanic Baljit Singh Kang, regardless of his personal safety not only saved the lives of 4 labourers and the Driver from getting instantly electrocuted but also averted irreparable damage to costly equipment/vehicle. Unfortunately, Charge Mechanic Baljit Singh Kang was himself electrocuted in the process.

2) GS-121155X, Charge Mechanic, Baljit Singh Kang, displayed courage, valour and presence of mind in saving the lives of his colleagues under circumstances of great danger to his own life and in the process sacrificed his life.

G. B. PRADHAN
Jt. Secy.

---

No. 26-Pres/97.—The President is pleased to approved the award of 'Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Shri Vikram Gautam,
S/o Shri Pradeep Singh Gautam,
Kothi No. 1/Sector 14,
Sonepat-131 001,
Haryana.

On 13-1-1995 at about 8..15 A.M., five rufflans attacked Shri Harish Kumar Kaushik, a student of XIIth Standard, Sambhu Dayal Modern School, Sonepat, Shri Vikram Gautam, his classmate, happened to pass by that way. He rushed to the help of Harish Kumar and succeeded in saving him from the rufflans. In his struggle with the rufflans, Shri Gautam sustained knife injuries on his back, arm & head. Without caring for his injuries, he rushed the badly injured Harish to the Hospital for timely medical aid including surgery. But for his timely intervention, Harish Kumar would have succumbed to the stab injuries. Later on, the culprits were identified, arrested and criminal case registered against them.

2. Shri Vikram Gautam showed courage and promptitude in saving the life of his classmate, unmindful of the risk to his own life.

2. Shri Ravinder Dhalta,
Village Matasa, P. O. Jharog,
Tehsil Jubbal, Distt. Shimla,
Himachal Pradesh.

There was a suspension bridge on Pabbar River at Saraswati Nagar which got damage in 1995. The Government, therefore, constructed a 75 Metres long and 50 feet high hanging bridge to enable the people to cross over to the other side of the river.

2. On 5-2-1996, Shri Mahendra Jinta, Supervisor, Himachal Pradesh Food & Civil Supplies Corporation, while crossing the Pabbar River through the hanging bridge, accidentallly fell into the river. Although the depth of the water was about 3 to 4 feet only at that point of time, the water current was so strong that it carried Shri Mahendra Jinta 5 to 6 Metres away from the place where he fell. Shri Ravinder Dhalta, Public Distribution Assistant, Jhagtan, also happened to cross the bridge at that time. Shri Ravinder Dhalta immediately jumped into the river and rescued Shri Mahendra Jinta to safety. In the process, Shri Ravinder Dhalta suffiered some injuries.

3. Shri Ravinder Dhalta showed courage and promptitude in saving the life of Shri Mahendra Jinta at the risk of personal injury.

3. Km. D. R. Siri Gouri,
S/o Dr. D. A. Rudrappa,
Senior Specialist,
Door No. 117 (32),
C. G. Hospital Quarters,
Davanagere-577 004.

On 16-10-1995 at about 9.25 P.M., Shri Samson (24 years) residing in Davanagere Hospital Quarter climbed to the terrace of his house and hanged himself from a nearby tree branch 30 feet high from the ground to commit suicide due to unemployment problem. On hearing his mother's cries, many people gathered on the spot but nobody tried to save his life. At this crucial moment, one Shri Kumaraswamy and his sister, Km. Siri Gouri came running with a tourch. Shri Kumaraswamy climbed the tree close to the first floow of Shri Samson's house and cut the rope with the help of a sickle. With great courage, Kum. Siri Gouri, who was standing on the ground, used all her strength and caught hold of Shri Samson to prevent his fall to the ground. Shri Kumaraswamy climbed from the tree quickly and cut the rope around the neck of Shri Samson which was too tight. There was cardio respiratory arrest in Samson. Sensing the emergency, Kum. Siri Gouri started external cardio massage and Shri Kumaraswamy began mouth to mouth respiration. After about 15 minutes of continuous effort, Shri Samson's cardio respiratory function was revived.

2. Kumari D. R. Siri Gouri showed exemplary initiative promptitude and courage in saving the life of a person from almost certain death.

4. Shri Vishram Subray Naik,
Madhewada, Korwadi Village,
Karwar Taluk,
Uttar Kannada District,
Karnataka.

On 20-5-1996, 21 persons were crossing the Kali River from Korwadi to Ulga in a country boat. When the boat was about 10 to 15 feet away from the bank of the river, it capsized under its load and all the passengers fell into the river. The depth of the river was about 25 feet at this point. On seeing this, Shri Vishram Subray Naik, who was cutting firewood on the bank of the river, rushed to the spot. He jumped into river and rescued 7 persons one by one. Seven persons drowned to death and the remaining seven persons swam to safety on their own.

2. Shri Vishram Subray Naik displayed courage and promptitude in saving the lives of 7 persons from drowning in the Kali River unmindful of the risk to his own life.

5. Shri Ratnaj Babu Agawane,
No. 547, 13th Cross 5th
Main Dollars Colony,
R. M. V. Extension,
Bel Road, Bangalore.

On 24-5-1994, Shri M. Veerappa Moily, the then Chief Minister of Karnataka was visiting Singatalur village on the banks of the Thunga-bhadra River to provide immediate relief to the victims of a capsized boat. The Deputy Commissioner & District Magistrate, Shri Ratnaj Babu Agawane, the Superintendant of Police. Ex-Minister Shri Shambunath and Video photographer Shri Kadlikoppa, were following the Chief Minister's Boat. Their boat suddenly capsized in 25' deep water endangering their lives. The Superintendant of Police, swam to safety. Shri Ratnaj Babu Agawane also knew swimming. However, Shri Shambunath and Shri Kadlikoppa did not know swimming. Shri Agawane saw S/Shri Shambunath and Kadlikoppa struggling for life. He immediately

swung into action to save their lives. The Video-photographer was extremely terrified and did not make any attempt to float. Instead he started dragging Shri Agawane into water. Therefore he could not be saved and was unfortunately drowned. However, Shri Agawane succeeded in saving the life of Shri Shambunath, Ex-Minister, by dragging him nearer to the shore. Shri Shambunath was finally pulled out of the river and to safety by people from another small boat. In the process, Shri Agawane remained in the river which was 25 feet deep and about 300 feet wide, for over seven minutes.

2. Shri Ratnaj Babu Agawane displayed courage and promptitude in saving the life of Shri Shambunath unmindful of the risk involved to his own life.

6. Shri D. R. Kumara Swamy,
S/o Dr. D. A. Rudrappa,
Senior Specialist,
Door No. 117 (32),
C. G. Hospital Quarters,
Davenagere-577 004.

On 16-10-1995 at about 9.25 P.M., Shri Samson (24 years) residing in Davenagere Hospital Quarter climbed to the terrace of his house and hanged himself from a nearby tree branch 30 feet high from the ground to commit suicide due to unemployment problem. On hearing his mother's cries, many people gathered on the spot but nobody tried to save his life. At this crucial moment, one Shri Kumaraswamy and his sister, Km. Siri Gouri came running with a tourch. Shri Kumaraswamy climbed the tree close to the first floor of Shri Samson's house and cut the rope with the help of a sickle. With great courage, Kum. Siri Gouri, who was standing on the ground, used all her strength and caught hold of Shri Samson to prevent his fall to the ground. Shri Kumaraswamy climbed down from the tree quickly and cut the rope around the neck of Shri Samson which too tight. There was cardio respiratory arrest in Samson. Sensing the emergency, Kum. Siri Gouri started external cardio massage and Shri Kumaraswamy began mouth to mouth respiration. After about 15 minutes of continuous effort, Shri Samson's cardio respiratory function was revived.

2. Shri D. R. Kumaraswamy showed exemplary initiative, promptitude and courage in saving the life of a person from almost certain death.

7. Shri Anish,
Kaniyankandiyil,
Keezhur Desom, P. O. Kilur,
Payyoli, Kozhikode District,
Kerala.

On 9-6-1996 at about 8.00 a.m., five persons including two children were crossing the river 'Kuttiadi Puzha' in a country boat on their way to the Maniyoor village to attend a marriage function. When their boat was about 20 Metres away from the bank of the river at the 'Moozhikkal Kadav' Point of the river near Payyoli village, it capsized and all the five passengers fell into the river. The depth of the river at the site of the accident was about 7 to 8 Metres. On seeing this, Shri Anish and Shri Sreedharan who were standing on the bank of the river jumped into the river, swam to the place of accident and rescued all the five persons to safety one by one.

2. Shri Anish showed courage and promptitude in saving the lives of five persons from drowning in the 'Kuttiadi Puzha' river unmindful of the risk to his own life..

8. Shri M. R. Biju,
Madathil House,
Kudayathoor P. O.,
Kolapra-685 590,
Idukki District, Kerala.

On 30-5-96 at 9.00 A.M., Master Ajil (12 years) while taking bath at Pampazha Kadavu of Malankara Dam along with his mother, accidentally slipped and fell into the water. The depth of water was 6 Meters at that time. Seeing her son drowning, the mother shouted for help. On hearing her cries, people rushed to the site but nobody could gather courage to venture into the Dam to save the drowning child. At this critical juncture, Shri Biju belonging to the same village, came forward for help, jumped into the water and rescued the child to safety.

2. Shri M. R. Biju displayed courage and promptitude in saving the life of a child from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

9. Master Prajesh,
S/o Shri Nanu,
Kanalommal House,
Kayakkodi (PO),
Kayakkodi, Kozhikode Distt.,
Kerala.

On 16-6-1994, between 4 & 5 p.m., Km. Ayisha (6 years) while returning from her school slipped and fell into a canal. The 4 metres deep canal was full of fast flowing water. She was carried about 70 metres away by the strong current of the water. On seeing this, Master Prajesh (15 years) jumped into the canal without caring for his own life and rescued Km. Ayisha to safety.

2. Despite his tender age, Master Prajesh showed courage and promptitude and saved the life of a girl from downing in the canal.

10. Shri Rajan, (Posthumous)
S/o Shri Sebastian,
Pappaly Veedu,
Ashokapuram, Aluva,
Eranakulam District,
Kerala.

On 2-8-1995, a passenger bus on its way to Kalady from Ankamaly, overturned into a marshy paddy field while giving side to another vehicle. The Bus was filled with passangers, mostly with school children. Shri Rajan, the Door Checker, who was standing at the front door when the accident occured might have easily jumped out to safety before the bus overturned. But he stretched both his hands across the door and prevented the school children from falling down from the Bus into the marshy field thus saving their lives. When the bus overturned, Shri Rajan hit the marshy land and the others fell over him. Shri Rajan died due to axphyxia.

2. Shri Rajan displayed exceptional courage and promptitude in saving the lives of young children and in the process made the supreme sacrifice of his life.

11. Shri Sreedharan,
Kalarikandy House,
Keezhur Desom, P.O. Kilur,
Payyoli, Kozhikode Distt.,
Kerala.

On 9-6-1996 at about 8.00 a.m., five persons including two children were crossing the river 'Kuttiadi Puzha' in a country boat on their way to the Maniyoor village to attend a marriage. When their boat was about 20 Metres away from the bank of the river at the 'Moozhikkal kadav' Point of the river near Payyoli village, it capsized and all the five passengers fell into the river. The depth of the river at the site of the accident was almost 7 to 8 Metres. On seeing this Shri Sreedharan and Shri Anish who were standing on the bank of the river, jumped into the river, swam to the place of accident and rescued all the five persons to safety one by one.

2. Shri Sreedharan showed courage and promptitude in saving the lives of five persons from drowning in the 'Kuttiadi Puzha' river unmindful of the risk of his own life.

12. Shri M. K. Suresh Lal,
Muringalathu House,
Golden Street,
Vaduthala P. O.,
Kochi-23, Ernakulam Distt.,
Kerala.

On 5-12-1995 at about 8.30 P.M., S/Shri M. K. Sureshlal and V. M. Ummer working as Lascars in the Passenger Boat belonging to Water Transport Department, saw a Maruti Car with three persons on board, plunging into water. Unable to move out of the car, Smt. Nancy Joy and her five year old son put their heads out through the window of the car and screamed for help. On hearing their cries, Shri M. K. Sureshlal and Shri V. M. Ummer brought their boat near

the ill-fated car, jumped into the backwaters and pulled out all the three persons one by one despite the hostile current of the water.

2. Shri M. K. Suresh Lal displayed courage and promptitude in saving the lives of three persons trapped in the car unmindful of the risk involved to his own life.

13. Shri Udaya Kumar Manapoyil,
Manapoyil House,
Chelora Village, P. O. Kappad,
Kannur Taluk, Kannur Distt.,
Kerala-670 006.

On 6-8-1995, three high school students, S/Shri Salam, Vinod and Sathar, had gone to the sea at Payyambalam Beach for bath. They could not negotiate the turbulent sea and were struggling for life. None of the spectators including the fishermen present on the spot dared to make an attempt to save the boys. On seeing this, Shri Udayakumar Manapoyil, who was amongst the people present at the Beach, jumped into the rough sea despite being warned by others about the risk to his life. He succeeded in saving the lives of two students (S/Shri Salam and Vinod). Unfortunately, in the meantime, the third student (Shri Sathar) was drowned to death.

2. Shri Udayakumar displayed courage and promptitude in saving the lives of two boys from drowning unmindful of the risk to his own life.

14. Shri V. M. Ummer,
Boat Lascar No. C. C. 4069,
Kerala State Water Transport,
Department, Regional Office,
Ernakulam, Kerala.

On 5-12-1995 at about 8.30 P.M., S/Shri V. M. Ummer and M. K. Sureshlal, working as Lascars in the Passenger Boat belonging to Water Transport Department, saw a Maruti Car with three persons on board, plunging into water. Unable to move out of the car, Smt. Nancy Joy and her five year old son put their heads out through the window of the car and screamed for help. On hearing their cries, S/Shri V. M. Ummer and M. K. Sureshlal brought their boat near the ill-fated car, jumped into the backwaters and pulled out all the three persons one by one despite the hostile current of the water.

2. Shri V. M. Ummer displayed courage and promptitude in saving the lives of three persons trapped in the car unmindful of the risk involved to his own life.

15. Shri Vijayan V.,
Chirayil Veedu,
Thathamunna, Nooranad, P.O.,
Mavelikkara,
Alappuzha District,
Kerala-690 504.

On 3-11-1995 at about 2 P.M., Master Santhoshkumar, P., Vth Standard Student, C.B.M. High School, Nooranad Alappuzha District fell into an unprotected well of about 27 feet depth near the School. The neighbours and students gathered on the spot but nobody came forward to rescue the boy from drowning. At this point of time Shri Vijayan V. (18 years), a student of the same School climbed down into the well and saved life of Master Santhoshkumar.

2. Shri Vijayan V. showed exemplary courage and promptitude in saving the life of a boy from drowing in a well unmindful of the grave risk involved to his own life.

16. Shri Rafeeque,
S/o Shri O. P. Bavakunju,
Thayyil Purayidam,
Sanathanam Ward,
Allappuzha, Kerala.

On 7-2-1996 at about 12 Noon, a shed at Angawadi near AR Camp, Allappuzha caught fire. At the time of the incident 13 children below the age of 5 years and a teacher were in the shed. Suddenly the fire engulfed the entire shed. The teacher and the children shouted for help. On hearing their cries, P. C. 3806 Shri Rafeeque of the A. R. Camp rushed for help and engaged himself in he rescue operation and succeeded in bringing them out to safety. On hearing the cries of two children left behind in the burning shed, he entered the shed again and brought them out to safety swiftly.

2. Shri Rafeeque showed courage and promptitude in saving the lives of 13 children trapped in the fire unmindful of the risk involved to his own life.

17. Km. Kiran Gujjar,
H.N. 12/21/1,
Sultania Infantry Lines,
Bhopal, Madhya Pradesh.

On 15-7-1992 between 5-6 P.M., Km. Kiran Gujjar (4½ years) took her brother Master Gaurav (2½ years) to the water tank with an intention to wash his mud stuck feet. Accidentally, Master Gaurav slipped and fell into the tank. The water tank was having 3½ feet water at the time of incident. The boy started drowning and only his cloths were visible. On seeing this, Km. Kiran Gujjar caught hold his floating cloth tightly and then pulled him out to safety.

2. Despite her tender age, Km. Kiran Gujjar showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of his brother unmindful of the grave risk involved to her own life.

18. Shri Abdul Wahid Khan,
Driver, Madhya Pradesh State
Transport Corporation,
Sub-Depot Padurna,
District Chhindwara,
Madhya Pradesh.

In Padurna City, situated on the banks of the Zam River, 'Gotmar Mela' is organised after the Pola Festival every year. People on the each side of the river throw stones at the people on the other side of the river as part of the traditional celebrations which is known as 'Gotmar Mela'. Since the Pola Festival falls during the last week of August or first week of September, the Zam River is generally flooded due to Monsoon rain and there is always the possibility of accidental drowning. Due to the historic and traditional importance of the festival, people throng the place to participate in the 'Gotmar Mela'. In 1994, the Gotmar Mela was celebrated on 6-9-94. The river was in flood on that day. Two spectators injured by stones hurled by the participants of 'Gotmar' accidentally fell into the river and were being carried away by the current of the fast flowing river. On seeing this, Shri Abdul Wahid Khan, who was present there to see the Mela, jumped into the river and rescued them to safety.

2. Shri Abdul Wahid Khan showed courage and promptitude in saving the lives of two persons from drowning in the Zam River.

19. Master R. K. Narjit Singh
alias Japan Singh,
S/o Shri R. K. Priyojit Singh
Uripok Sorbon Thingel,
Imphal-795 001,
Manipur.

On 10-10-96 at about 8.00 A.M., two children were playing near a pond, about 80 feet away from their home. Master R. K. Biswajit Singh (5 years 8 months), the elder one while collecting some reeds from the pond, accidentally fell into it and cried for help. On seeing this, the younger brother Master R. K. Narjit Singh alias Japan Singh rushed to his help. While the elder brother was holding the brink of the pond, Master R. K. Narjit Singh alias Japan Singh pulled him out to safety.

2. Despite his tender age, Master R. K. Narjit Singh alias Japan Singh showed courage and promptitude in saving the life of his elder brother from drowning in the pond.

20. Shri Nehskhemlang Rynjah,
S/o Shri P. Kharmawlang,
Village Smit, East Khasi Hills,
Hills District,
Meghalaya.

On 9-8-1996 at about 12.30 P.M., Shri Nehskhemlang Rynjah, while returning to his school after taking his tiffin at home, saw a male child of about 3 year age floating in the Umiew River. During rainy season, the river is about 20 feet wide and 7 to 8 feet deep. Its bank is high, rough and rocky as it is flowing down from the high hill from the east side of the Shillong peak. The current of the water is fast and swirling. The child was unconscious. On seeing the child floating in the river, Nehskhemlang jumped into the river and succeeded in rescuing the child to safety after braving the swirling current of the rough river. The incident was witnessed by the three persons including the sister of the rescued child. Shri Nehskhemlang lives by the side of the Umiew river. Earlier also, Shri Nehskhemlang had saved the lives of three children from drowning in the same river—a six year old boy in June, 1995 and a minor girl and a ten year old boy in 1993.

2. Shri Nehskhemlang Rynjah showed courage and promptitude in saving the life of a child from drowning in the Umiew River unmindful of the grave risk to his own life.

21. Master Ramngaihsanga,
S/o Shri Chhandama
Buarpui, Lunglei District,
Mizoram.

On 8-12-95 Shri Chhandama and his son Master Ramngaihsanga, aged 10 years who were staying out in the jhum but far away from their village during the paddy harvest season, went into the jungle near their jhum. Suddenly, a big wild bear attacked them and was on Shri Chhandama biting him in many places. On seeing this, Master Ramngaihsanga fearlessly attacked the misguided bear with his dao. The bear ran away with wounds. On hearing the cries of the father and the son and the roar of the bear, people from the nearby Jhums came to the spot. The injured Chhandama was taken to the Buarpui Primary Health Centre, where he was given ten stitches and treated for 12 days and released on 20-12-95 duly cured.

2. Master Ramngaihsanga showed exemplary courage and promptitude in saving the life of his father from the wild bear.

22. Km. Babita Sahoo,
C/o Shri Dhurba Charan Sahoo,
Village Malipur,
P.O. Asureswar,
District Cuttack.

On 13-5-95, at 9.30 A.M., there was a heavy rain and storm in village Malipur under Sakepur P.S. Cuttack District. Kumari Babita Sahoo saw two children named Km. Kani aged about 2 years and Km.. Bhabani Sahoo aged about 5 years drowning in a pond located in Malipur Panchayat. Kumari Babita Sahoo without caring her personal safety in heavy rain and storm, rescued the drowning girls cleaverly.

2. Km. Babita Sahoo showed conspicuous courage, promptitude and bravery in saving the lives of two girls by putting her own life at stake.

23. Shri Dibakar Mallik, (*Posthumous*)
S/o Shri Basudev Mallik,
Village Manapur,
P.O./P.S. Kanpur,
District Cuttack, Orissa.

On 20-4-1993 at 9.00 A.M., a thatched house in Village Manapur, District Cuttack caught fire accidentally. Two minor children, namely Km. Keri Behera (8 years) and Master Kapila Behera (7 years) were trapped in the burning house. Shri Dibakar Mallik, a student of 11th Class, who was residing nearby, entered the burning house and rescued them to safety. He entered the house again to retrieve the valuables when thatched roof gave way and fell over him. He suffered massive burn injuries. Later on, the Fire Station personnel pulled him out from the debris. Shri Dibakar Mallik, subsequently, succumbed to his burn injuries.

2. Late Shri Dibakar Mallik showed, courage and promptitude in saving the lives of two young children trapped in the burning house and while retrieving the valuables of his neighbour he unfortunately lost his life.

24. Km. Geeta Damore,
D/o Shri Laxman Lal Damore,
C/o Smt. Deetu Damore,
Govt. Girls Secondary School,
Dhariabad, Udaipur,
Rajasthan.

On 24-1-1996 a picnic party was organised by the local unit of the Rajasthan State Bharat Scouts & Guides at 'Vijashan Mata' to mark the 'Vasant Panchhami' festival. A member of the Picnic Party, Km. Monica Pitliya, student of 6th class of the Government Girls Secondary School, Dhariabad, while crossing the river, accidentally, slipped and fell into the river. The river spread over 466 sq. miles, was having varying depth from 17' to 50' at 'Vijashan Mata' site. On seeing this Smt. Kiran Giri Goswami, Teacher and Smt. Raj Kumari Bhargava, Principal, jumped into the river to save the life of the girl but they themselves started drowning. At this critical juncture, Km. Geeta Damore (13 years), a Guide of the School, unmindful of the grave risk to her own life, jumped into the river and one by one rescued them to safety. She has been awarded Appreciation Certificate and District Level Award on the occasion of Independence Day, 1996 in recognition of her feat.

2. Despite her tender age, Km. Geeta Damore showed exceptional courage and promptitude in saving the lives of 3 persons.

23. Shri Shanti Lal,
S/o Shri Nathu Lal,
Shahpura Mohalla,
Near Gibson Hostel,
Beavar, Rajasthan.

On 24-12-94 at 10.00 A.M., Shri Shanti Lal was sitting at his shop when he heard people shouting. He rushed to the crossing and saw that the people had gathered around the house of one Shri Sugan Lal. The house was on fire and black thick smoke was emanating from the second floor of the house. On making enquiries, he was informed that one Smt. Bhambri Devi was trapped in the fire. The fire was caused due to leakage from a Gas Cylinder. On hearing about the impending danger to the life of a woman, Shri Shanti Lal ran up the stairs to the second floor of the house when he saw the high intensity of the fire and realised that the situation was very serious. He entered the house after taking a piece of tarpoulin and rescued the woman to safety. In the process, Shri Shanti Lal sustained serious burn injuries. Undeterredby the injuries, he entered the house again and picked up the gas cylinder and threw it out in the open. In the process he suffered burn injuries. Thereafter the Fire Brigade personnel, who had arrived by that time extinguished the fire on the gas cylinder.

2. Shri Shanti Lal showed courage and promptitude in saving the life of a woman unmindful of the risk involved to his own life.

26. Shri Vijaypal Singh, (*Posthumous*)
S/o Shri Richhpala Singh,
Village & P.O. Dhassu,
Tehsil & P.S. Laxmangarh,
District Sikar, Rajasthan

On 4-11-1995 at about 9.00 P.M., four robbers armed with revolvers and knives attacked a petrol pump in Laxmangarh town, Sikar District, on National Highway

No. 11, with intent to loot. At the time of the incident, Shri Vijaypal Singh, who was employed at the petrol pump, was attending to a visitor, one Shri Khetaram, inside the cabin at the petrol pump. The robbers demanded that Shri Vijaypal Singh should hand over the entire cash to them. They threatened to kill him if he failed to do so. Shri Vijaypal Singh was unarmed. However, he displayed exceptional courage and pounced upon two of the four robbers. The third robber attacked Shri Khetaram. Shri Vijaypal Singh intercepted him and saved Shri Khetaram. Shri Vijaypal Singh gave a stiff fight to the robbers. In the ensuing scuffle, the robbers inflicted two serious knife injuries on him. He fell on the ground but did not loosen his grip on the two robbers and they also fell with him. However, due to serious knife injuries Shri Vijaypal Singh died on the spot. In the meantime, Shri Khetaram, with the assistance of few other persons who had reached the spot by that time, caught one robber. The other three robbers fled but were arrested by the police subsequently.

2. Shri Vijaypal Singh showed courage in resisting the attempt to rob the petrol pump and also promptitude in saving the life of another person while still engaged in a fight with two of the four robbers. In the process, he made the supreme sacrifice of his life.

27. Master T. Mariappan,
S/o Shri S. Thangavelu,
33/1, East Car Street,
Nagercoil-629 001,
Kanyakumari District,
Tamilnadu.

On 14-5-1995, Kanyakumari Express met with a major accident near Salem. The air conditioned compartment of the train got derailed and rolled over to one side. As a result of this, passengers travelling in the AC Compartment were trapped inside. Master T. Mariappan (15 years), a student of 9th Standard, was travelling along with his family members from Madras to Nagercoil by the same train. Master T. Mariappan, broke open the window-panes of the compartment and pulled out 15 seriously injured passengers to safety.

2. Despite his young age, Master T. Mariappan showed courage and promptitude in saving the lives of 15 persons trapped in the derailed compartment of the train.

28. Master Chandan Singh,
S/o Shri Bhagwan Das,
Meshkarghat (Circut House),
Kanpur Cantt., Uttar Pradesh.

On 10-8-1995 at about 4-5 P.M., Master Chandan Singh (10 Years), an ace Swimmer, was practising swimming with the help of an air filled tube at Meshkarghat in the river Ganga. At that time, one Shri Sanjay Kumar Gupta (age about 20 years) was taking bath in the river near the spot where Shri Chandan Singh was swimming.. Shri Sanjay Kumar Gupta did not know swimming. Suddenly his foot slipped and he started drowning. Only his hands were visible over the surface of the water. Although there were other people present at the spot, nobody dared to come forward to rescue the drowning man. Sensing danger to the life of Shri Gupta, Master Chandan Singh swam upto Shri Sanjay Kumar Gupta and rescued him with the help of the air filled tube.

2. Despite his tender age, Master Chandan Singh showed courage and promptitude in saving the life of a boy much older than him, unmindful of the risk involved to his own life.

29. Shri Kaustav Roy Barman,
S/o Shri Sudarshan Roy Barman,
18, Nazrul Sarani, Sunny Park,
P.O. Italgacha Road, P.S. Barasat,
District North 24-Pargana,
Calcutta-700 079.

On 6th July, 1995 at about 2.30 A.M. two dacoits broke open the gate of the house of Shri Sudarshan Roy Barman and attacked him with guns and other deadly weapons demanding money and other valuables. Shri Barman promised to hand over whatever he had in his possession. This infuriated the dacoits who thought that Shri Barman was trying to gain time and started beating him. One of the dacoits aimed a gun at Shri Barman to shoot him. On seeing this, Master Kaustav Roy Barman, son of Shri Sudarshan Roy Barman (Aged about 12 years), who was present in the same room and was silently observing the incident, jumped in front of the gun to save the life of his father from certain death. At that moment the dacoit fired two shots, one of which pierced in the left side of Kaustav Roy's chest. The other shot went wide off the mark. Meanwhile neighbours, on hearing the shouts of Kaustav's mother Smt. Sikha Barman and gun shorts, rushed to their help. The dacoits fled the place empty handed. Master Kaustav was taken to the nearest Municipal Hospital and then to the Medical College and Hospital in the city of Calcutta for medical treatment, where he recovered after a few days hospitalisation.

2. Despite his young age, Master Kaustav Roy Barman displayed courage and promptitude in saving the life of his father from the dacoits disregarding risk to his own life.

30. Shri Mumtaj Ahmed Khan,
E-22, Ghafoor Nagar,
Jamia Nagar,
New Delhi-110 025.

On 3-11-1995, a boat carrying PAC Personnel capsized in Yamuna river near Okhla Barrage. Eight persons drowned instantly and one was making desperate attempts to save himself from drowning. On seeing this, Shri Mumtaz Ahmed Khan, a teacher in the Jamia Middle School and an ace swimmer and diver, who has a number of brave acts to his credit, jumped into the river, swam up to the drowning PAC personnel and rescued him. Subsequently, he also fished out dead bodies of seven of the eight persons who had drowned.

2. Shri Mumtaz Ahmed Khan showed courage and promptitude in saving the life of a PAC personnel from drowning in the Yamuna.

31. Shri Abdul Kader Pallippuram,
Pallippuram,
Agatti-682 553..
Lakshadweep.

In the absence of harbour facilities in Lakshadweep waters,embarkation and disembarkation of passengers from ships becomes very difficult especially during the South-West Monsoon period because of the heavy wind and huge waves.. Operation of mechanised boats is not safe. Only small country crafts are put to use during the monsoon period when the sea becomes rough. On 17-8-96 at 2..00 P.M., "M.V. Bharatseema" touched the eastern side of Agatti Island and about 12 country crafts were engaged for embarkation/disembarkation of passengers on board. Due to heavy wind there were heavy breaks in the Lagoon and as a result while returning after embarkation of passengers on the ship, one country craft capsized at the entrance of the Lagoon. Rescue operations were carried out and injured persons rushed to hospital. Shri Abdul Kader Pallippuram, a poor person from the Island who also engaged himself in the rescue operation, saved the life of a 5 year old girl Km. Ruksana K. C. from drowning to death.. Dead body of a passenger of the ship namely Shri Atakoya who was found missing was flushed out later on. Shri Abdul Kader had also saved the life of a deaf and dumb boy, Master Mohammed Hussain Lavanakkal during 1995 when the boat capsized at he entrance of lagoon of Agatti Island.

2. Shri Abdul Kader Pallipuram exhibited courage and promptitude in saving the life of a girl and a boy from drowning.

32. No. 75327-Y Surgeon Commander
Dhananjai Krishnarao Wasunkar,
105-Sheetal Apartments,
406 Savarkar Road,
Tilakwadi, Belgaum-590005,
Karnataka.

On 5-12-95 at about 8.45 P.M., Surgeon Commander Dhananjai Krishnarao Wasunkar (No. 75327—Y) a sub-

mariner and underwater Medicine Specialist, while posted as Principal Medical Officer in INS Venduruthy, noticed a Maruti Zen Car accidentally falling into the Mathanherry Channel, off. Embarkation Jetty in Wellingdon Island, Kochi. In the darkness, he could hear the screams of a woman and a child in grave distress from the car plunging into the water. Realising the gravity of the situation, he promptly jumped into the water and rescued the drowing woman and the child and brought them safely ashore. On being informed by the lady that her husband Shri Joy Puthookkaran who was driving the car was trapped inside the submereged car, Shri Wasunkar again jumped into the channel and found that the husband was badly trapped inside the submerged car. He summoned a few fishing boats in the vicinity and organised diving operations. He dived into the channel himself, broke open the door glass of the car and extricated the driver by dismantling a few fittings. The man trapped inside the car had no visible signs of life as he had taken in a large quantity of water. The man had stopped breathing and was frothing from the mouth and the nose. At this juncture, when a few seconds delay could have been fatal for the man, Shri Wasunkar immediately administered Cardio Pulmanary Resuscitation and external Cardiac massage The treatment slowly helped in reviving Shri Joy Puthookkaran. Shri Puthookkaran, was immediately rushed (along with his wife and child) to the nearby Port Trust Hospital where under the guidance of Shri Wasunkar, he was brought to a stable condition.

2. Surgeon Commander (No. 75327-Y) Dhananjai Krishnarao Wasunkar showed courage and promptitude in saving three lives from drowning under circumstances of grave bodily injury to himself.

33. No. 4176211 Sepoy Puran Singh,
Village Jhalahat,
P.O. Dham Deval,
Teh. Panikhet, Distt. Almora,
Uttar Pradesh.

Sepoy Puran Singh was on leave at his village Jhalahat in Almora District. On 15-2-1995, while on his way to the village temple, he found that a large number of persons had gathered on the bank of the Ram Ganga River and they were shouting for help. He saw two ladies drowning in the river and struggling for life. At the same time, he saw another person also jumping into the river to save them, but due to the exceedingly strong current and the depth of the water, he too started drowning. Sepoy Puran Singh, flung himself into the river, disregarding his personal safety, to save the drowning persons. He saved all the three persons one by one from the jaws of death.

2. Sepoy Puran Singh displayed courage and promptitude under circumstances of great danger to his life in saving the lives of three persons from drowning.

34. Go 172035 Y Shri Shriniwas Oem,
Village Modrapar,
Teh. Khalilabad,
P.O. Bakhira, Dist. Basti,
Uttar Pradesh.

Shri Shriniwas, Operator Excavating Machinery of Project Deepak was deployed on Summer snow clearance of Manali-Sarchu Road.

2. On 15th May 1995, at 1145 Hrs at KM 163.00 on Manali-Sarchu Road, while operating his machine, Shri Shriniwas suddenly heard he noise of triggering of a snow avalanche and huge boulders coming down wth the avalanche that were expected to land where a Casual Paid Labour Karma Bahadur was working. A boulder hit Shri Karma Bahadur resulting in compound fracture of his right leg. On seeing this, Shri Shriniwas immediately lifted Shri Karma Bahadur and rolled down the valley. Within few seconds, a hue avalanche hit the same site where Shri Karma Bahadur was lying injured earlier before he was lifted by Shri Shriniwas. But for his timely action it would have meant certain death for Shri Karma Bahadur. Thereafter, Shri Karma Bahadur was immediately evacuated to District Hospital, Keylong.

3. Shri Shriniwas, thus, displayed exceptional courage, humane approach, presence of mind and devotion to duty of a high order in saving the life of Shri Karma Bahadur disregarding risk to his own life.

35. Master Anindya Bhalla,
B-16/2 Ramesh Nagar,
(Double Storey)
New Delhi-110 015.

On 14-2-1996 at about 10.45 P.M., Dr. A. P. Bhalla and his son Anindya (10½ years) were returning hom after attending a wedding when their car was suddenly hit on the right side by a speeding truck. Instantly both of them tried to pull each other towards the centre of the car. Just then the truck hit them again. This time the impact was so severe that Dr. Bhalla could not move. Anindya, however, pulled him to the centre of the car immediately. With this blow, the truck dragged the car, ripping apart its right side and tearing its bonnet away. The car could stop only after the truck climbed atop the road divider and hit an electric pole The driver fled the scene. Dr. Bhalla was bleeding profusely, his hand having got entagled between the door and the steering wheel and the broken glass of the windows having pierced it. Without wasting any time Anindya tied a big hanky around his father's arm and tried to pull him out of the car. When he did not succeed, he stood in the middle of the road Signalling the passing vehicles to stop for help. Seeing him waving his hands frantically, two cars stopped, Anindya joined them in dragging out his father from the car and requested them to take him to the All India Institute of Medical Sciences. Before leaving he collected his father's wallet, spectacles, watch etc. on reaching the hospital, he pleaded with the doctors and nursing staff to attend to Dr. Bhalla (who had by now lost a lot of blood) proclaiming that he was a faculty member of AIIMS. After ensuring that his father was being attended to, he informed his family members on telephone, about the accident and their whereabouts.

2. Master Anindya Bhalla showed courage and promptitude in saving the life of his father in an accident.

36. Master Dulal Das,
C/o Shri Manoranjan Das,
Village Bagber,
P. S. Kalamchoura,
West Tripura-799 102.

On 19-2-1996 at about 1.00 A.M.,a ganag of armed dacoits (about 15-16 in all) struck at village Bagber. Some of them forcibly entered Shri Manoranjan Das's house, injured him as well as Shri Satya Ranjan Das and killed his maternal uncle Shri Horalal Das. The miscreants then entered the cow-shed where Master Dulal Das, aged about 15 years (Manoranjan Das's younger brother) was sleeping. As they opened the door, Dulal woke up. The dacoits tried to tie him up with a rope. Dulal, however, pleaded to spare him and take whatever they wanted. Taking pity on the child, the dacoit turned to leave the place. As the dacoits were leaving, Dulal picked up a dao and attacked one of them causing him a grievious injury on his neck. The injured man yelled out in pain. Dulal then hit another 2/3 of his gang members inflicting injuries on all of them. The resultant hue and cry awoke the rest of the villagers who rushed to the site of the incident. As a result the dacoits beat a hasty retreat and are suspected to have fled across the border into Bangladesh under cover of darkness. They left behind some of their arms and ammunition.

2. Master Dulal Das showed courage and promptitude in fighting the dacoits and forcing them to flee.

37. Master Geogy Francis,
S/o Shri Francis,
Amchery House, I
P.O. Puthenchira,
Distt. Thrissur, Kerala.

On 28-7-1995 at about 9.00 A.M., Km. Suja Varghese, a student of class IV of the HFLP School, Puthenchira, accidentally fell into a canal while crossing the wooden bridge over it, enroute to her school. The strong current of water swept her away and she started drowning. On seeing this, Master Geogy Francis (12½ years), a student of standard VIII of the UP Govt. School, who was passing through that way, jumped into the swirling waters and rescued the girl to safety.

2. Master Geogy Francis showed courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning in the canal unmindful of the risk involved to his own life.

38. Km. Himakuntala Vasudha,
D/o Shri H. Krupanandam,
Door No. 9/188, Kapu Veedi,
Mannur Village, Rajampet P.O.,
Cuddapah District,
Andhra Pradesh-516 115.

On 1-9-1995 at about 5-35 P.M., Karnataka State Roadways Transport Corporation (Mandya Depot) Bus was passing through a dense forest. It suddenly fell into a valley. The area had been hit by a cyclone. On seeing this, Km. Himakuntala Vasudha (8 years), who is mildly mentally retarded, came forward and rescued a two-year-old child.

Despite the handicap, Km. Himatkuntala Vasudha exhibited courage in saving the life of a two-year-old child.

39. Km. Mekal Suta Singh,
Village Shukkarwada,
Tehsil Babai,
Distric Hoshangabad,
Madhya Pradesh.

On 31-5-1995 while taking bath at the shallow end of the Narmada river, Km. Mekal Suta Singh heard loud cries of some women. On seeing a girl namely Km. Jayashree struggling for life in the deep water of the river. Km. Mekal Suta Singh, who did not know swimming, jumped into the water and caught hold of the girl. As soon as she caught hold of the girl, the latter held her tightly with the result that both of them started drowning. However Km. Mekal Suta Singh succeeded in freeing herself from the grip of Km. Jayashree but Km. Jayashree again caught Km. Mekal Suta Singh by hair. In the process, Km. Mekal Suta swallowed lot of water. Not loosing her courage and patience, Km. Mekal Suta wade another effort to save the life of Km. Jayashree and pushed her towards the shallow water and succeeded in rescuing her to safety. While Km. Mekal Suta succeeded in rescuing Km. Jayashree, she herself started drowing. At this juncture one Shri Narendra Singh who had gone to river for a bath carried unconscious Km. Mekal Suta to the bank of the river. She was revived later on with medical help.

2. Km. Mekal Suta Singh showed courage and promptitude in saving the life of Km. Jayashree..

40. Master L. Naresh Kumar Singh,
Thoubal Wangnataba,
Thoubnal-795 138,
Manipur.

On 19-11-1995, Naresh Kumar Singh (15 years 10 months) and his mother had gone to a relative's house. While watching a video casette, he heard a loud splash emanating from the direction of the pond situated near the house. He rushed to the place and ascertained that a 2-3 year old child namely Kenedy playing near the pond, was missing. Master Naresh Kumar immediately jumped into the pond and found the child. When he reached near the child, the child clung to him tightly with the result that both of them began to drown. He, however, managed to float upwards and swam to safety alongwith the child. As the child was unconscious, Master Naresh revived him by extracting water from his stomach and giving him artificial respiration. After regaining consciousness Master Kenedy started crying. Hearing the cries, passers-by came to their aid and rushed them to Community Health Centre for necessary treatment.

2. Master L. Naresh Kumar Singh showed courage and promptitude is saving the life of a 2-3 year old child from drowing in a pond unmindful of the risk involved to his own life.

41. Master Ramesh,
C/o President Press Club,
Village Siran, P.O. Ganchar,
District Chamoli Garhwal,
Uttar Pradesh.

On 4-10-1995, Shri Ramesh (10 years) and his 8 year old friend Deepu were going to the forest to bring back their cows, grazing there. All of a suddan, a leopard attacked Master Ramesh. Unperturbed by the sudden attack, Master Ramesh hit the animal on its chest twice with his legs to free himself from its clutches. Seeing his friend fighting with the beast, Master Deepu ran back to the village to inform the villagers about the insident. Master Rameen continued to fight with the animal and succeeded in freeing himself from the animal. The leopard fled to the jungle. In the scume with the animal, Master Ramesh received serious injuries on his thigh and had to be hospitalised for treatment.

2. Master Ramesh showed courage and promptitude in saving himself from the leapard.

42. Master Santosh Kumar Mudli,
Nimapara Bazar,
P.O. Nimapara, Distt. Puri-725 106,
Orissa.

On 20-4-1995 four girls namely Malli, Kalpana, Umakta and Manu all about 7-8 years of age were taking bath in the Kusabhadra river when they slipped into deep water. They raised cries for help. On hearing their cries, Master Santosh Mudli (11 years), who had just reached the river for a bath, jumped into the turbulent river and succeeded in saving the lives of three children. However, Km. Manu, who had been, by that time, swept far away by the current of the water could not be located and drowned to death. Her dead body was later recovered by the fire brigade personnel who rushed to the site on being informed about the incident by Master Santosh Kumar Mudli.

2. Master Santosh Kumar Mudli showed courage and promptitude in saving the lives of three girls unmindful of the grave risk involved to his own life.

43. Master Shyam Babu,
Village & P.S. Kali Peeth,
District Rajgarh,
(Biawara), Madhya Pradesh,
Pin-465 661.

On 26-5-1995, at about 4-30 P.M., some people were boring a well near Kali Peeth when all of a sudden the compressor pipe of the machine burst with a loud bang. With the impact, Master Shyam Babu (about 10 years), who was present at the spot was thrown about 30 feet above the groud before he fell down. Hearing the sound, the eight men working at some distance, rushed towards the boy. Unperturbed by his injuries, Master Shyam Babu warned the workers not to come too close to the machine and gestured them to flee. He also set free some cattle tied nearby. Despite his warning, five of the workers went near the machine. Just then the detonator of the machine brust resulting in instant death of four of the five men. The fifth—Shyam Babu's Father—dead in the Hospital.

2. Despite his injuries and young age, Master Shyam Babu took initiative in saving the lives of cattle and made a valiant effort to save the lives of workers.

44. Master Syeed Ameer Pasha,
Village Somasila, Kollapur
Mandal-509 102,
Mahboobnagar District,
Andhra Pradesh.

On 20-2-1996, 21 students of Sri Sathya Sai School of Kollapur went for a picnic to Somasila Village, along with their class teacher. At about 3-30 P.M., 10 students and their teacher went for boating in the river Krishna. After crossing a distance of about 75 yeards, their boat suddenly capsized. On seeing this, Master Syeed Ameer Pasha, who was sitting at the bank of the river, got into another boat and rushed to the spot. As the boat did not have any paddles, he used his hands for the purpose. On reaching the place, he engaged himself in rescue operation and succeeded in saving the lives ot two girls and the teacher, while other three students swam to the bank. The remaining five students were, however, drowned.

2. Master Syeed Ameer Pasha showed courage and promptitude in saving the lives of two girls and their teacher from drowning in the Krishna river.

G. B. PRADHAN
Jt. Secy. to the President

MINISTRY OF HOME AFFAIRS
INTER-STATE COUNCIL SECRETARIAT

New Delhi, the 10th March 1997

No. 8/1/96-ISC.—In continuation of Notification No. 43/2/91-ISC, dated 04-09-1996, the Prime Minister has approved that the following members of the Union Council of Ministers will be permanent invitees to the Council hereafter :—

(i) Minister for Industry.

(ii) Minister for Human Resource Development.

J. SANYAL
Adviser
Inter-State Council

---

MINISTRY OF WELFARE
(PREM DIVISION)

New Delhi-66, the 12th March 1997

RESOLUTION

F. No. 5-8/96(R) PREM.—In supersession of Government Notification No. 1-18/93 (R) PREM dated 24-2-95 the Combined Advisory Committee on Social Welfare Research for the Ministry of Welfare is hereby reconstituted to advise the Ministry of Welfare on the following aspects :—

(i) Promotion/coordination and utilisation of research in social welfare, social policy and social development, welfare of the Scheduled Castes, Scheduled Tribes, Minorities and Backward Classes.

(ii) Identification of areas of research in the said fields:

(iii) Screening and approval of various research proposals/projects received from individuals/organisations; and

(iv) Other matters relating to promotion of research in the said fields.

2. The Committee will have the following members :—

Chairman (Ex-Officio)

(1) Additional Secretary to the Govt. of India, Ministry of Welfare.

Members (Ex-Officio)

(2) Joint Secretary (M&BC) Ministry of Welfare.

(3) Joint Secretary (PREM&SD) Ministry of Welfare.

(4) Joint Secretary (SCD) Ministry of Welfare.

(5) Joint Secretary (TD) Ministry of Welfare.

(6) Joint Secretary (HW) Ministry of Welfare.

(7) Financial Adviser (W) Ministry of Welfare.

(8) Registrar General of India Ministry of Home Affairs.

(9) Director General Central Statistical Organisation.

(10) Adviser (SD&WP) Planning Commission.

Members

(11) Mrs. Shobhana Bharatiya
Executive Director
The Hindustan Times
18-20, KG Marg, New Delhi.

(12) Sh. B. Peckem
Vice Chancellor
North Eastern Hill University
Shillong, Meghalaya.

(13) Prof. G.S. Gandhi
Sociologist
Jawaharlal Nehru University
New Mehrauli Road, New Delhi.

(14) Ms. Madhu Keshwar
Editor, Manushi
C-202 Lajpat Nagar (Part-I)
New Delhi-110024.

(15) Shri I. S. Rao, IAS (Retd.)
HIG-2, Ankur Colony
Shivaji Nagar, Bhopal-16
Madhya Pradesh.

(16) Shri J. B. Raju
President, Dalit Sena
(A. P. Branch)
H. No. 262, Salarjung Colony
Hyderabad-500008.

(17) Dr. Kashinath G. Jalmi, MLA
Leader of Opposition, Goa Assembly
Secretariat, Panaji.

(18) Shri Kartar Singh
Atuchala Estate
P. O. Guru Bayar, PS Barari
District Katihar, Bihar.

(19) Dr. (Ms.) Sobia Khan
51, Ashiana John Baptort Road
Bandra (West), Mumbai
Maharashtra.

(20) Prof. Khaleeq Ahmed Nizami
Aligarh Muslim University
Aligarh, Uttar Pradesh.

(21) Shri S. K. Rungta
President
National Federation of the Blid
2322, Laxmi Narain Street, Pharganj
New Delhi-110055.

(22) Dr. Shaik Mohiuddin
Islampet, Baptla, Guntur Distt.
Andhra Pradesh.

(23) Shri Ram Asray Vishwakarma
Advocate
111/103, Purana Mamkodganj
Allahabad, Uttar Pradesh.

(24) Mrs. Manjit Sodhia
Principal
Govt. College for Women
Ludhiana, Punjab.

Member-Secretary (Ex-Officio)

(25) Joint Director (PREM)
Ministry of Welfare.

3. The tenure of the members of the Committee will be two years i.e. from 1st January 1997 to 31st December, 1998. Government however, may reconstitute the Committee at any time.

4. No remuneration will be paid for membership of the Committee. The official members will, however, be entitled to draw TA/DA etc. for the journeys undertaken by them in connection with this assignment in accordance with the rules applicable to them from their respective offices. The non-official members of the Committee will be entitled to TA/DA for their journeys to attend meetings as admissible to officers of First Grade of the Govt. of India.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

ANAND BORDIA
Joint Secretary

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1997
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and published by the Controller of Publications, Delhi, 1997.